# भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें

**डॉ. कुसुम डोबरियाल**

उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
परिसर, पौड़ी गढ़वाल – २४६००१


Scanned with OKEN Scanner

# भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें

---

**डॉ. कुसुम डोबरियाल**

उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
परिसर, पौड़ी गढ़वाल – 246001

With best compliments to
Dr. Lavkesh Kumar

राजमंगल प्रकाशन

An Imprint of **Rajmangal Publishers**

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रमणिका


| शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| अभिमत | 1 |
| प्राक्कथन | 6 |
| अध्याय- 1 : | 11 |
| गढ़वाली संस्कृति: एक अंतरावलोकन | 11 |
| अध्याय- 2 : | 25 |
| रामायण कालीन संस्कृति एवं प्राकृतिक सम्पदा | 25 |
| अध्याय 3 : | 31 |
| जौनपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक "मौण मेला" की परम्परा का एक अध्ययन | 31 |
| अध्याय 4 : | 41 |
| उत्तराखण्ड की पारम्परिक आयुर्वेदिक चिकित्सा परम्परा: एक संक्षिप्त अध्ययन | 41 |
| अध्याय 5: | 52 |
| कुमाऊं संस्कृति में "हिलजात्रा उत्सव" का महत्व-एक अध्ययन | 52 |
| अध्याय 6 : | 58 |
| भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परंपरागत आहार | 58 |
| अध्याय- 7: | 67 |
| "रावणार्जुनीयं महाकाव्य" में अलंकार तत्त्व विवेचन | 67 |
| अध्याय- 8 : | 77 |
| "देवी कुंजापुरी सिद्धपीठ" एवं क्षेत्र के पवित्र उपवनों में जैव विविधता का एक संक्षिप्त अध्ययन। | 77 |


Scanned with OKEN Scanner

अध्याय 9:
बेहतर स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद और योग का उपयोग: एक समीक्षा 86
86
अध्याय 10:
पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के "नागदेव मन्दिर" के पवित्र उपवन व वन क्षेत्र का संक्षिप्त अध्ययन 93
अध्याय 11 : 93
अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत महाकाव्यों में राष्ट्रीय भावना 105
अध्याय 12: 105
परम्परा एवं आधुनिकीकरण 115
अध्याय 13: 115
"भारतीय संस्कृति" का विकास एवं चुनौतियाँ 148
अध्याय 14: 148
"भारतीय संस्कृति" का विश्वव्यापी प्रभाव: श्रीमद्भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में 153
अध्याय 15: 153
भारतीय संस्कृति की एक झलक 157
अध्याय 16 : 157
हिंदी साहित्य: भारतीय संस्कृति एवं परम्पराए 162
162
अध्याय 17 :
"संस्कृत वाड़्.मय"में वर्णित नाट्यशास्त्र की उपयोगिता 170
170
अध्याय 18:
भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी तथा महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सम्बन्धी चिन्तन 175
175

Scanned with OKEN Scanner

# अध्याय 16 :
# हिंदी साहित्य: भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं

**लवकेश कुमार**
सहायक प्राध्यापक हिंदी
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर
पौड़ी गढ़वाल -२४६००१ - उत्तराखंड
(lavakesh88kumar@gmail.com)

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में देखा जाए तो भारतीय संस्कृति विश्व के प्राचीनतम और सृजनात्मक संस्कृतियों में से एक है जहाँ विविधता में एकता के भाव समाहित है। भारतीय समाज अनेक जाति-धर्म-क्षेत्र और भाषा में बटे होने के बाद भी यहाँ के तीज-त्योहारों में अपनापन, भाई-चारे के साथ समरसता के भाव दिखाई पड़ते हैं। जहाँ विदेशियों द्वारा भारतीय संस्कृतियों को विध्वन्स करने के बाद भी भारतीय समाज उनको अपनी संस्कृतियों में समाहित कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तानांतरित करती चली आ रही है। यह भारतीय संस्कृति की महानता है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का जो चित्र उकेरा गया है उसमें सभी जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-झरना, पहाड़-समुद्र के साथ-साथ पंचतत्वों का विशेष महत्त्व है, जो ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की दृष्टि से विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी, ने'अशोक के फूल' और 'कुटज' जो निबन्ध लिखें हैं। वह भारतीय संस्कृति और साहित्य का परिचायक है।

**'अशोक के फूल'** निबन्ध में अशोक वृक्ष की पूजा हजारो-हजारो साल पहले गंधर्वों और यक्षों द्वारा शुरू की गयी थी। वास्तव में यह पूजा



Scanned with OKEN Scanner

अशोक की नहीं बल्कि कंदर्प देवता की होती है। यह पूजा आज भी समृद्ध और संभ्रांत परिवारों में नववधू के आगमन पर गृह-प्रवेश से शुरू होती है। इस भारत वर्ष में असूर, आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष, गंधर्व आदि प्राचीन काल में न जाने कितनी मानव-जातियाँ आयी और भारत वर्ष को बनाने में अपना विशेषकर योगदान दिए जिसे हम हिन्दू-रीति-नीति कहते हैं। जो आर्य और आर्येतर उपादानों का अद्भूत मिश्रण है। यहाँ एक-एक पशु-पक्षी न जाने कितने स्मृतियों का इतिहास लेकर हमारे सामने उपस्थित होते हैं। इसी में अशोक की भी अपनी स्मृति-परम्परा है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबंध **'कुटज'** के माध्यम से संदेश देते है कि सुख हो या दुःख, प्रिय हो या अप्रिय, जो मिल जाए उसे शान के साथ हृदय से बिल्कुल अपराजित होकर सोल्लास ग्रहण करें, हार मत मानें। 'कुटज' को अवधूत कहा गया है। जो अपने मन पर सवारी करता है। जो मन को अपने पर सवार नहीं होने देता है। जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अभिव्यक्त कर रहा है। बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने अपने निबंध "भारतीय साहित्य की विशेषताएँ" में करें लिखा है कि "समस्त भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता, उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है। इसकी मौलिकता इतनी मार्मिक है कि जो अपने भारतीय दर्शन को आत्मसात कर स्वतंत्र अस्तित्व की पताका विश्व में फहरा रहा है।"

भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने अपने निबंध 'संस्कृति और सभ्यता' में लिखा है कि "जब पहली बार किसी वस्तु का निर्माण या सृजन होता है तब उसे संस्कृति कहते हैं। सृजन के बाद जब उसका प्रयोग करने लगते हैं तब उसे सभ्यता कहते हैं। यह सृजन और प्रयोग लोकहित में होने के कारण जब पीढ़ीदर पीढ़ी अपनाए जाने लगती है तब वह परम्परा में परिणित हो जाती है।" उदाहरण स्वरूप सूई-धागे का पहली बार निर्माण होना संस्कृति है जब उसका प्रयोग कर लोकहित में विस्तारित कर दिया जाता है जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपना जाने लगी उसे हम सभ्यता कहने लगे।"



Scanned with OKEN Scanner

# भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें

**डॉ. कुसुम डोबरियाल**

उपाचार्य, संस्कृत विभाग

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

परिसर, पौड़ी गढ़वाल – 246001

With best Compliments to

Dr. Bindu Yadav

**राजमंगल प्रकाशन**

An Imprint of **Rajmangal Publishers**

**मूल्य** : 229/- रु.

**ISBN : 978-9394920378**

*Published by :*

**Rajmangal Publishers**

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Sangwan, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA
**Cont. No. +91- 7017993445**

www.rajmangalpublishers.com
rajmangalpublishers@gmail.com
sampadak@rajmangalpublishers.in

---

**प्रथम संस्करण :** अगस्त 2022 – पेपरबैक

**प्रकाशक : राजमंगल प्रकाशन**

राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,

सांगवान, क्वार्सी, रामघाट रोड,

अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत

**फ़ोन :** +91 - 7017993445

---

**First Published :** Aug. 2022 - Paperback
**Printed by :** Thomson Press India LTD, Repro India LTD & Manipal Tech LTD
**eBook by :** Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)
**Copyright** © डॉ. कुसुम डोबरियाल

यह एक काल्पनिक कृति है। नाम, पात्र, व्यवसाय, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना के उत्पाद हैं या काल्पनिक तरीके से उपयोग किए जाते हैं। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं से कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में मुद्रित, प्रसारित-प्रचारित या विक्रय नहीं किया जा सकेगा। किसी भी परिस्थिति में इस पुस्तक के किसी भी भाग को पुनर्विक्रय के लिए फोटोकॉपी नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त किए गए विचार के लिए इस पुस्तक के मुद्रक/प्रकाशक/वितरक किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं। सभी विवाद मध्यस्थता के अधीन हैं, किसी भी तरह के कानूनी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत ही होगा।

# अध्याय 18:
# भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी तथा महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सम्बन्धी चिन्तन

**डॉ बिन्दु यादव**

सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग

हे0न0ब0ग0वि0वि बी0जी0आर0 परिसर पौड़ी गढ़वाल

(binduyadav111@gmail.com)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् एवं सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" जैसी भावना भारतीय संस्कृति में नारी के गौरवपूर्ण स्थानको प्रदर्शित करती है । वेदों एवं पुराणों की इस संस्कृति में वर्णित नारी आधुनिक नारी से भिन्न सबला, पराक्रर्मी, सौभाग्यवती एवं संयमी है। वैदिक समाज में नारी एवं पुरूष को समान अधिकार प्राप्त थे। नारी पुरूष की सहयोगिनी थी। वह युद्ध क्षेत्र में भी पुरूष के साथ जाया करती थी। सतयुग में रानी कैकयी के राजा दशरथ के साथ युद्ध क्षेत्र में जाने की कथा सर्वविदित है। रानी कैकयी ने राजा दशरथ के रथ के पहिये को साधने के लिये अपनी उंगली काट कर प्रयोग की थी जिससे उनकी वीरता, पतिभक्ति एवं तीक्ष्ण बुद्धि का प्रमाण मिलता है। वैदिक काल में नारी को परिवार एवं समाज में सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता था। धार्मिक कार्यों में भी पति के साथ पत्नि की उपस्थिति वांछनीय थी। प्राचीन भारत में स्त्रियों को आदि शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्रियां देवी कही गयी हैं और उन्हें मात्र शक्ति के रूप में शक्ति का प्रतीक माना गया है।... संसार में जितना ऐश्वर्य और सौन्दर्य है वह श्री और लक्ष्मी के रूप में जाना जाता है। इन दोनो को विष्णु की पत्नि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इससे स्त्री के गौरव और महत्व का बोध होता है।[1]

भारतीय संस्कृति में समस्त विश्व को एक परिवार माना गया है तथा स्त्री को देवी स्वरूपा मानकर पूजनीय कहा जाता है। ज्ञान, धन एवं शक्ति तीनों की स्वामिनी त्रिदेवीयां यथा सरस्वती, लक्ष्मी एवं दुर्गा हैं। अर्थात् सृष्टि की समस्त महत्वपूर्ण वस्तुओं को नारी से ही जोड़कर देखा गया है। इससे सिद्ध होता है कि वैदिक कालीन समाज में नारी को सृष्टि का महत्वपूर्ण अंग समझा जाता रहा है। चिरकालीन् महानतम् भारतीय संस्कृति शनैः-शनैः विकृत एवं रूढ़िवादी मानसिकता की बेडियों में जकड़ने लगी। वैदिक कालीन देवी सम पूजनीय नारी पितृसत्तामक मानसिकता की शिकार होती चली गयी। नारी की स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाये जाने लगे। नारी के कोमल हृदय, संयमी स्वभाव एवं सहनशीलता जैसे गुणों को माध्यम बनाकर पितृसत्तामक मानसिकता वाले समाज ने उसे बेडियों में जकड़कर पशुवत् व्यवहार की दुष्परम्परा का सूत्रपात किया। नारी की स्थिति बद से बद्तर होती चली गयी। गृहस्वामिनी कही जाने वाली नारी मात्र गृहदासी बनकर रह गयी। सर्वप्रथम उससे शिक्षा का अधिकार छीना गया तत्पश्चात् नारी को गृह शोभा बताकर घर की चार दीवारी में बन्दी बनाने की प्रथा आरंभ हुई।

हिन्दी साहित्य में नारी की इस बदलती हुई परिस्थिति एवं छवि का स्पष्ट चित्रांकन हुआ है। प्रसिद्ध छायावदी कवियित्रि महादेवी वर्मा ने नारी सम्बन्धी चिन्तन को प्रकट करते हुए लिखा है कि '' अनेक बार नारी की बाह्य परिस्थितियों के परिवर्तन की ओर ध्यान ना देकर मैं उसकी शक्तियों को जाग्रत करके परिस्थितियों में साम्य लाने वाली सफलता सम्भव कर सकी हूं। समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है और यह ज्ञान ज्ञाता की अपेक्षा रखता है। अतः अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए। सामान्यतः भारतीय नारी में इसी विशेषंता का अभाव मिलेगा। कहीं उसमें साधारण दमनीयता है और कहीं असाधारण विद्रोह है। परन्तु संतुलन से उसका जीवन परिचित नहीं है।[2] अतः कहीं-कहीं पर नारी रूढ़िवादी बेडियों



को स्वीकार कर आत्मसमर्पण करके जीवन जी लेती है और कहीं उसके भीतर का विद्रोह उसे रूढ़ियां तोड़कर आगे बढ़ने को प्रेरित करता है।

नारी को केवल उसके सामाजिक अधिकारों से ही वंचित नही किया गया है अपितु उससे उसके मौलिक अधिकार भी छीने जाने लगे। बाल विवाह, परदा प्रथा, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं के चलते नारी का शोषण किया गया है। सती प्रथा के नाम पर नारी को जबरन पति की जलती हुई चिता में झोंक दिया जाता है। समाज में सदा से ही पुत्र को पुत्री से अधिक श्रेष्ठ मानकर जन्म लेते ही नवजात कन्या की हत्या कर दी जाती है। आधुनिक समाज में तो स्थिति तो और भी भयावह हैं। गर्भ में ही कन्या के भ्रूण को समाप्त कर दिया जाता है। जिसके लिये कभी तो नारी को जबरन यह कुकर्म करने हेतु बाध्य किया जाता है और कभी सामाजिक रूढ़ियो के चलते नारी स्वेच्छा से ही अपने गर्भ में पल रहे कन्या के भ्रूण की हत्या करने को विवश हो जाती है। कहीं-न-कहीं इसके पीछे पुरुष प्रधान समाज ही उत्तरदायी रहता है। इस सम्बन्ध में महादेवी जी का स्पष्ट कथन है कि '' नितान्त बर्बर समाज में स्त्री पर पुरुष वैसा ही अधिकार रखता है जैसे वह अपनी अन्य स्थावर सम्पत्ति को रखने को स्वतन्त्र है। उसके विपरीत पूर्ण विकसित समाज में स्त्री-पुरुष की सहयोगिनी तथा समाज का आवश्यक अंग मानी जाकर माता तथा पत्नी के महिमामय आसन पर आसीन रहती है।[3]

पितृसत्तात्मक समाज में जन्मी कुरीतियों ने भारतीय वैदिक संस्कृति को कलंकित किया है। भारतीय वेद, पुराण, उपनिषद एवं स्मृतियों में वर्णित उच्च मूल्यों को रूढ़िवादी समाज ने अपने अहंकार एवं लालसा तले रौंद कर अपने लिये पतन का मार्ग प्रशस्त किया है। विवाह संस्कारो में भी रूढ़िवादी सोच को प्राचीन परम्पराओं से जोड़कर देखने वालो के विषय में महादेवी जी लिखती है "प्राचीनता की दुहाई देने वाले कुलों में बिना देखे सुने जिस प्रकार उसका क्रय- विक्रय किया जाता है वह तो लज्जा का विषय है ही परन्तु

नवीनता के पूजकों में भी विवाह योग्य कन्या को बिकने के लिये खड़े पशु की तरह देखना कुछ गर्व की वस्तु नहीं" [4]।

आधुनिक समाज में विवाह जैसे पवित्र संस्कार भी दूषित हो चुके हैं। कितनी ही नारियां पुरुष प्रधान समाज में विवाह के नाम पर शोषण की शिकार होती हैं। पहले तो विवाह के लिये उन्हें अपनी कुशलता सिद्ध करनी होती है जिसके लिये उन्हें उनके व्यावहारिक गुणों के अतिरिक्त सौंदर्य की कसौटी पर परखा जाता है। मात्र सुन्दरता अथवा योग्यता ही पर्याप्त नहीं हैं इसके साथ दहेज के नाम पर भी नारी के साथ दुर्व्यवहार होता है। महादेवी जी के शब्दों में" पति होने के इच्छुक युवकों की मनोवृत्ति के विषय में तो कहना व्यर्थ ही हैवे प्रायः पत्नि के भरण-पोषण का भार ग्रहण करने के पहले भावी श्वसुर से कन्या को जन्म देने का भारी से भारी कर वसूलना चाहते हैं। एक विलायत जाने का खर्च चाहता है दूसरा यूनिवर्सिटी की पढ़ाई समाप्त करने के लिये रूपया चाहता है तीसरा व्यवसाय के लिये प्रचुर धन मांगता है। सारांश यह है कि सभी अपने आपको ऊँची-से-ऊँची बोली के लिए नीलाम पर चढ़ाए हुए हैं। प्रश्न उठता है कि क्या यह क्रय-विक्रय, यह व्यवसाय स्त्री के जीवन का पवित्रतम् बंधन कहा जा सकेगा? क्या इन्हीं पुरुषार्थ और पराक्रमहीन परावलम्बी पतियों से वह सौभाग्यवती बन सकेगी? यदि नहीं तो वह इस बन्धन को जो उसे आदर्श माता और आदर्श पत्नी के पद तक नहीं पहुँचा सकता, केवल जीविका के लिये कब तक स्वीकार करती रहेगी? अवश्य ही यह मत्स्य-बेध या धनुष-भंग द्वारा युवक के पराक्रम की परीक्षा का युग नहीं है परन्तु स्त्री, पुरुष में इतने स्वावलम्बन की अवश्य ही अपेक्षा रखती है कि वह उसके पत्नीत्व को व्यवसाय की तुला पर ना तौले। [5]

अपने लेखन के माध्यम से महादेवी जी ने निम्न वर्गीय स्त्री की निर्भीक्ता और साहसिक्ता का चित्रण प्रस्तुत किया है। बिबिया नामक पात्र के माध्यम से वे आधुनिक नारी के साहस एवं विद्रोह को प्रकट करती हैं। जैसे ही बिबिया को भनक लगती है कि उसके जुआरी पति रमई के सामने उसके जुए



के साथी करीम मियां ने यह प्रस्ताव रखा है कि वह बिबिया को ही जुए में दांव पर लगा दे तो " बस फिर क्या था भीतर से तरकारी काटने का बड़ा चाकू निकालकर और भौंहें टेढ़ी कर उन्हें बता दिया कि रमई की ऐसी हरकत करने पर वह उन दोनों के पेट में चाकू भोंक देगी। फिर चाहे उसे कितना ही कठोर दण्ड क्यों ना मिले पर वह ऐसा करेगी अवश्य। वह ऐसी गाय-बछिया नहीं है जिसे चाहे कसाई के हाथ बेच दिया जावे, चाहे वैतरणी पार करने के लिये महाब्राहमण को दान कर दिया जाय। [6]

महादेवी जी के सम्पूर्ण नारी सम्बन्धी लेखन में यही चिन्तन दृष्टव्य है कि नारी को भी पुरुष के समान समाज एवं राष्ट्र का विशिष्ट सदस्य समझा जाये । महादेवी जी इस तथ्य से भली-भांति परिचित थीं कि नारी के साथ भेद-भाव का व्यवहार तथा रूढ़ीवादी मानसिकता निःसन्देह एक दिन विद्रोह की आंधी का रूप ले लेगी। उनका मानना है कि " स्त्री भी पुरुष की तरह से एक नागरिक है और जब हम उसे नागरिक्ता प्रदान करते हैं तो उसके कर्त्तव्य और अधिकार दोनों पुरुष के समान ही परिभाषित होने चाहिये क्योंकि किसी भी राष्ट्र का नागरिक सामूहिक विकास को दृष्टि में रखकर शासित होता है और शासन में हस्तक्षेप तथा परिवर्तन करने का अधिकारी भी।अतः उसके राजनीतिक अधिकार पृथक नहीं किये जा सकते। महादेवी वर्मा स्त्री को सम्पत्ति के अधिकार से वंचित रखे जाने को लेकर भी अत्यन्त चिन्तित दिखती हैं। उनका कहना है कि यदि पुरुष धनोपार्जन कर अपने कर्त्तव्य का पालन करता हुआ समाज तथा देश का आवश्यक और उपयोगी अंग समझा जाता है, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों का यथेष्ट उपयोग कर सकता है तो स्त्री गृह में भविष्य के लिये अनिवार्य संतान का पालन-पोषण कर अपने गुरू कर्त्तव्य का भार वहन करती हुई इन सब अधिकारों से अपरिचित तथा वंचित क्यों रखी जाती है? [7]

नारी की समस्याओं के विषय पर महादेवी जी के विचार युगीन परिस्थियों की उपज हैं। वे नारी शक्ति को पुरुष से अधिक बलशाली मानती

हैं। स्त्री के व्यक्तित्व के विकास हेतु रूढ़िगत मान्यताओं से संघर्ष को महादेवी जी विशेष रूप से बाधक मानती हैं। नारी के कोमल प्राकृतिक स्वभाव, गुणों एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्व में आये परिवर्तन के मूल में पितृसत्तात्मक मनोवृत्ति के विरुद्ध रोष की भावना है। महादेवी जी के लेखन में जहॉं विद्रोह के तीव्र स्वर हैं वहीं संवेदना भी है। उनके साहित्य के केन्द्र में भी मानवीय संवेदना तथा मर्मस्पर्शी पीड़ा ही विद्यमान है। और यही भाव उनके काव्य तथा गद्य लेखन में भी दृष्टिगत होता है। सारांशतः महादेवी जी का नारी सम्बन्धी चिंतन नारी की वर्तमान स्थिति से नारी की वैदिक कालीन स्थिति की ओर अग्रसर प्रतीत होता है। जहां नारी-मात्र-नारी न होकर तथा पुरुष-मात्र-पुरुष ना होकर सर्वप्रथम सृष्टि की सुन्दरतम् रचना मानव मात्र समझे जाते थे और अपने-अपने गुणों के कारण विशिष्ट स्थान रखते थे। भारतीय संस्कृति में इस सृष्टि में व्याप्त समस्त जीवों के सुख की कामना की गयी है यथा -

**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।**
**सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।**

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:**


1 'स्मृतियों में नारी', डॉ भारती आर्य, विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (भदोही) पृष्ठ संख्या-22।

2 'श्रृखला की कड़ियां', महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद (भूमिकासे) पृष्ठ संख्या- 10।

3'श्रृखला की कड़ियां', महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद पृष्ठ संख्या-102।

4'श्रृखला की कड़ियां', महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद पृष्ठ संख्या-78।

5'श्रृखला की कड़ियां', महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद पृष्ठ संख्या-78।





6 'स्मृति की रेखाएं', महादेवी वर्मा, प्रकाशक- भारती भण्डार, इलाहबाद, पृष्ठ संख्या-111।

7'स्मृति की रेखाएं, महादेवी वर्मा, प्रकाशक- भारती भण्डार, इलाहबाद, पृष्ठ संख्या-24।

Edited by

**Ritushree Sengupta**

**Ashish K. Gupta**


# ART & AESTHETICS OF MODERN MYTHOPOEIA

## Literatures, Myths & Revisionism

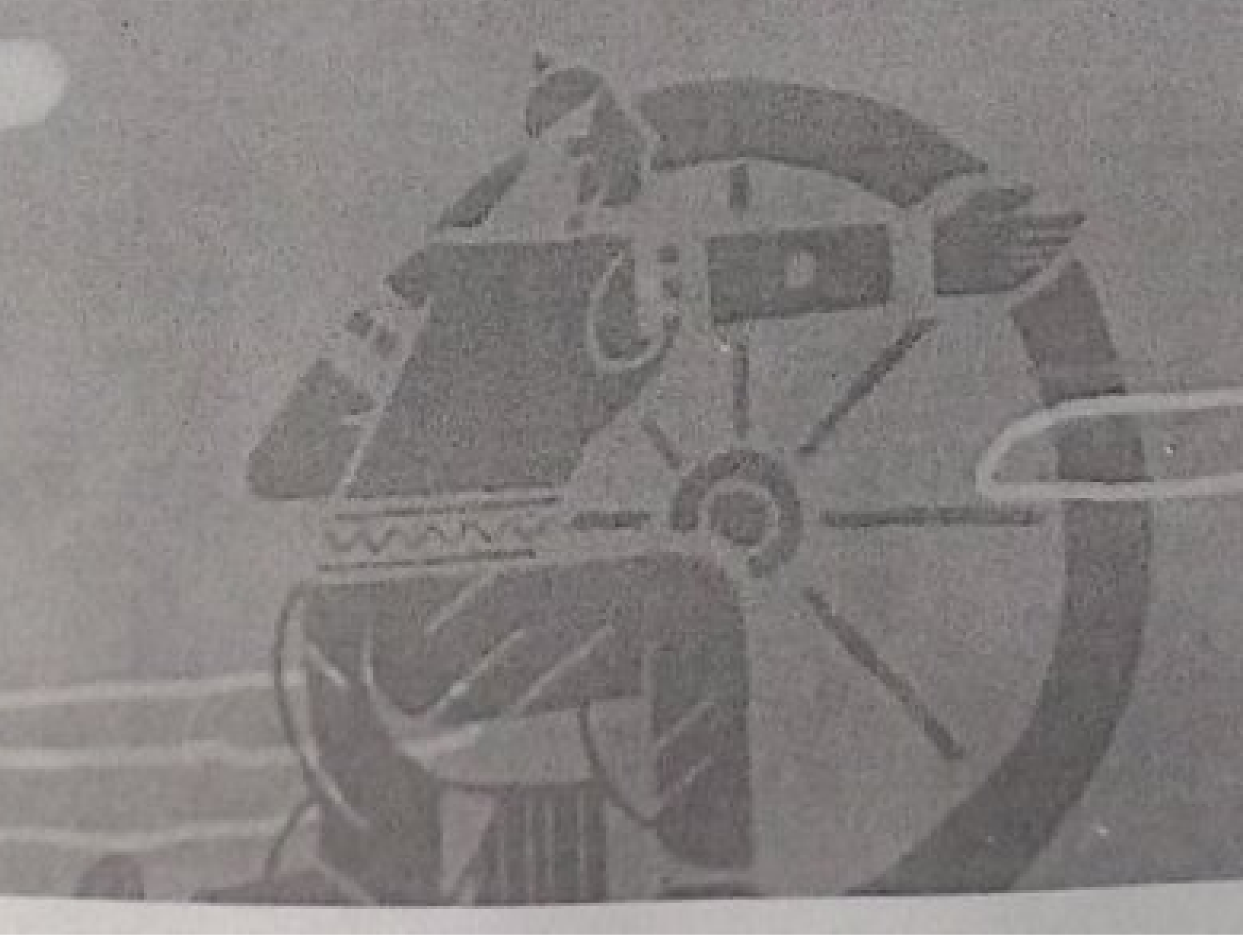

VOL. II

# Contents

*Foreword* *vii*

*Preface* *ix*

*Notes on Contributors* *xvii*

1. 'Ecology was my home now': Nandini Sahu's Ecofeminist Reading of the Myth of Sita 1
**Abhishek Chowdhury**

2. Is Greatness Dependent on Birth or Caste?: Reshaping the Mythical Realism depicted in Ranjit Desai's *Karna: The Great Warrior* 17
**Arundhati Patra**

3. Demythologizing the Hegemonic Myth: Jotirao Phule's *Slavery* 25
**Anandkumar Ubale**

4. Myth Representation and Human Culture in Contemporary Society 40
**Brajesh Kumar Gupta "Mewadev"**

5. Eco-criticism in Mythology: Representation of Nature in the *Ramayana* of Bhanubhakta 53
**Dechen Dolkar Bhutia**

6. Apsaras: The Lost Myth 62
**Guni Vats**

7. The Myth of Good Women: A Revisionist Reading of *The Penelopiad* and *Yagnaseni* 75
**Muskaan Kapoor**

8. Re-visioning the Myths of Ambaa and Shoorpanakha in Feminist Theatrical Narratives: Is it their Protest or Resistance? 91
**Praggnaparamita Biswas**

macmillan education

125

# Learning English Language Through Literature

## English Language – Core Compulsory Paper II for BA Students

Editors
Surekha Dangwal
DS Kaintura

# Learning English Language Through Literature

## English Language - Core Compulsory Paper II for BA Students

126608

**Editors**

Surekha Dangwal

*Professor, Department of English,*
*Modern European and Other Foreign Languages*
*Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University,*
*Srinagar (Garhwal), Uttarakhand*

DS Kaintura

*Professor, Department of English,*
*Modern European and Other Foreign Languages*
*Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University,*
*Srinagar (Garhwal), Uttarakhand*

macmillan education

1266081

MACMILLAN

© *Macmillan Publishers India Private Ltd, 2017*

All rights reserved under the copyright act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer language, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

*First published 2017*

MACMILLAN PUBLISHERS INDIA PRIVATE LTD
Delhi Bengaluru Chennai Kolkata Mumbai
Ahmedabad Bhopal Chandigarh Coimbatore
Cuttack Guwahati Hyderabad Jaipur Lucknow Madurai
Nagpur Patna Pune Thiruvananthapuram Visakhapatnam

ISBN: 978-9386-85384-4

Published by Macmillan Publishers India Private Ltd,
21, Patullos Road, Chennai 600002, India

Printed at : Tara Art Printers Pvt. Ltd., Noida

The publishers have applied for copyright permission for those pieces that need copyright clearance and due acknowledgement will be made at the first opportunity.

"This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action."

Image of Women in
THE PLAYS OF T.S. ELIOT
Dr. Poonam Bisht Rawat

ISBN
978-81-927481-4-6
Publisher - Pallwi
Prakashan Delhi - 110093
Total Pages - 176

ok)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | peer reviewed & UGC approved | | | |



| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | Journal) | | | |
| 2. Dr. (Mrs) Poonam Bisht Rawat | Idea of Liberation: Women of Canterbury in Thomas Stearns Eliot's Murder in the Cathedral psychological liberation versus religious oppression | Himalayan Journal of Social Science and Humanists (A peer reviewed & UGC approved Journal) | V -13 December 2018 (Page 11-14) | 0975-9891 | 45924 Impact Factor - 2.15 |
| 3. Dr. (Mrs) Poonam Bisht Rawat | Thomas Stearns Eliot's Characterization of Women: A Royalist as an anti - feminist: The Women of Canterbury in Murder in the Cathedral and Monica in the elder statesman | The Public: Problems and Solutions (an international Refereed Peer - reviewed Research Journal) | V - 7 Jan - march 2018 (Page 13-15) | 2320-4540 | 48845, 47263 Impact Factor - 2.362 |
| 4. Dr. (Mrs) Poonam Bisht Rawat | The concept of Affirmative and negative Women in Thomas Stearns Eliot's the Family reunion: A trend in contrast: Amy and Agatha | Adhikar - an international refereed and peer - Reviewed research Journal | V -1 Jan 2018 (Page 08-12) | 2231-2552 | 45496 Impact Factor - 2.360 |
| 5. Dr. (Mrs) Poonam Bisht Rawat | Thomas Stearns Eliot's Concept of Negative Women: A source in practice: A study in Ends and means : Celia and Labinia in the Cocktail party | World Translation An International Journal of literature and research | V- 7 issue - 5 Jan- June 2018 (Page 173-178) | 2278-0408 | 48773 UGC serial Number 0529 |

Published Book

| Name of Authors | Title of Book | ISBN |
|---|---|---|
| **Dr. (mrs) Poonam Bisht Rawat** | **Image of Women in the plays of T. S. Eliot's** | **978-81-927481-4-6 Publisher - Pallwi Prakashan Delhi - 110093 Total Pages - 176** |

**Total Number of Research Publications: 6, ( Including 1 Book)**

**(2)- Shree Vinay Kumar Varma - Nil**

## 3.4.5 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the last five years

| Sl. No. | Name of the teacher | Title of the book/chapters published | Title of the paper | Title of the proceedings of the conference | Name of the conference | National / International | Year of publication | ISBN/ISSN number of the proceeding | Affiliating Institute at the time of publication | Name of the publisher |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रो0 मंजुला राणा | कवि लक्ष्य और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ : महाकवि सूरदास | पुस्तक | | | National | 2017 | 978-93-88434-38-6 | | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 2 | प्रो0 मंजुला राणा | पहाड़गाथा | पुस्तक | | | National | 2018 | 978-81-260-4994-3 | | साहित्य अकादमी, नई दिल्ली। |
| 3 | प्रो0 मंजुला राणा | समीक्षा के व्यावहारिक संदर्भ : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल | पुस्तक | | | National | 2018 | 978-93-88434-37-9 | | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 4 | प्रो0 मंजुला राणा | भारतीय काव्यशास्त्र : परंपरा प्रवृत्ति | पुस्तक | | | National | 2019 | 978-93-88684-41-5 | | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 5 | प्रो0 मंजुला राणा | वेटिंग मदर और प्रेम कहानियां | पुस्तक | | | National | 2019 | 978-93-88684-1 | | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 6 | प्रो0 मंजुला राणा | माधव कौशिक की काव्य संवेदना | पुस्तक | | | National | 2020 | 978-93-88820-33-2 | | विजया बुक्स, नई दिल्ली। |
| 7 | प्रो0 मंजुला राणा | दसवें दशक के हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक सौहार्द (द्वितीय संस्करण) | पुस्तक | | | National | 2020 | 978-81-8143-863-8 | | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 8 | प्रो0 गुड्डी | भारतीय समाज और | ध्रुवस्वामिनी | | | National | 2019 | 978-81- | | गायत्री |

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | बिष्ट | नारी | का आधुनिक संदर्भ एवं नारी मुक्ति | | | | | 87364-78-8 | | पब्लिकेशन्स, रीवा (म.प्र.) |
| 9 | प्रो0 गुड्डी बिष्ट | प्रेमचन्द के कथा–साहित्य में विविध विमर्श | प्रेमचंद साहित्य में यथार्थवाद एक दृष्टि | | | National | 2019 | 978-81-87364-78-8 | | साहित्यभूमि, नई दिल्ली। |
| 10 | डॉ0 कपिल देव पंवार | निशंक के साहित्य में लोकतत्व | पुस्तक | | | National | 2022 | 978-93-90923-55-7 | | प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 11 | डॉ0 अमित कुमार शर्मा | सम–वेदना कोराना काल में स्वानुभूति | पुस्तक | | | National | 2022 | 978-93-81500-55-2 | | सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली। |
| 12 | डॉ0 बिन्दु यादव | भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें | भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी तथा महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सम्बन्धी चिन्तन | | | National | 2022 | 978-9394920378 | | राजमंगल प्रकाशन |
| 13 | श्री लवकेश कुमार | भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें | हिंदी साहित्य : भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं | | | National | 2022 | 978-9394920378 | | राजमंगल प्रकाशन |
| | | | | | | | | | | |

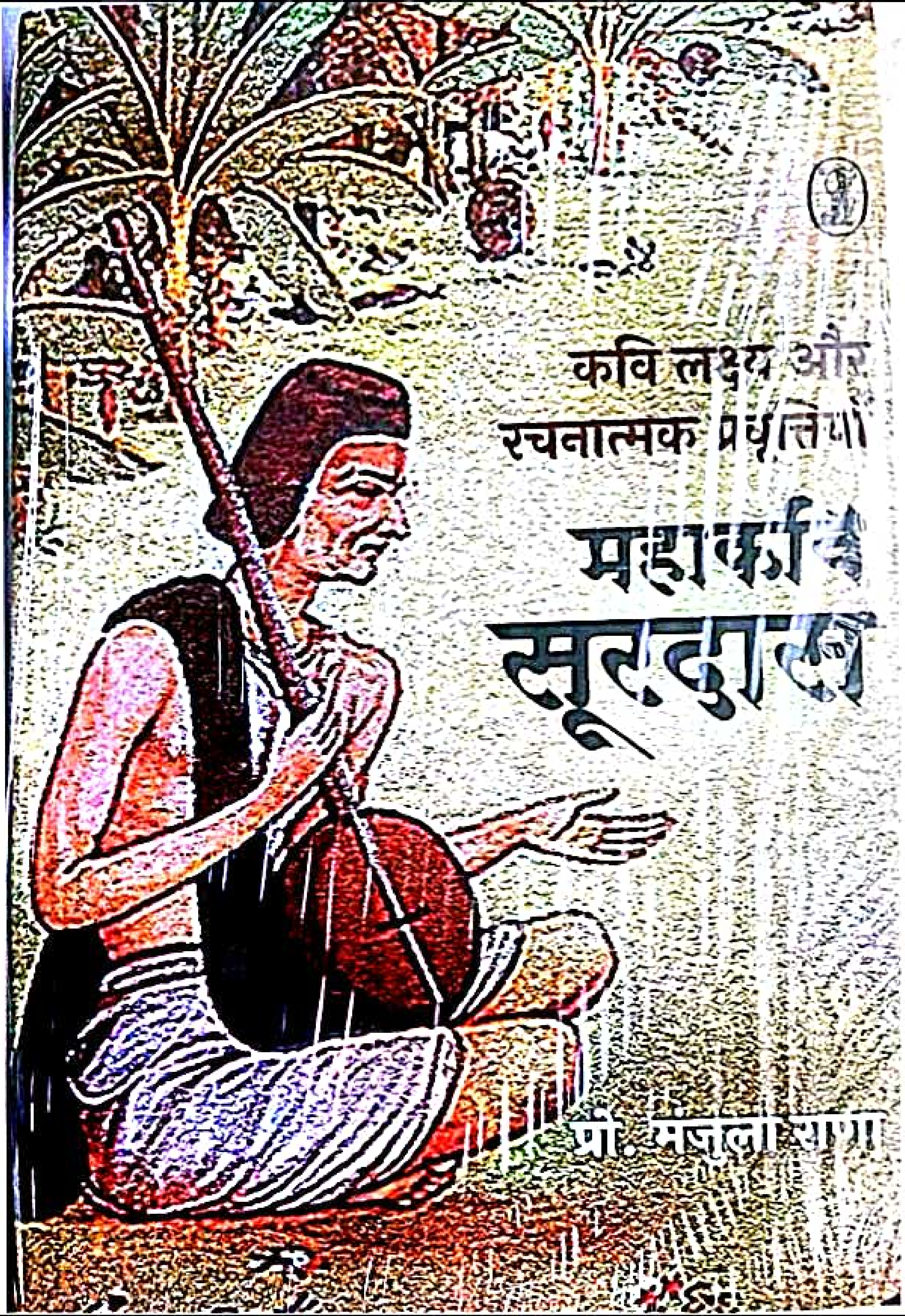
कवि लक्ष्य और
रचनात्मक प्रवृत्तियाँ
महाकवि
सूरदास
प्रो. मंजुला राणा

"भक्ति की चरमावस्था पराभक्ति की वह अवस्था है, जहाँ भक्त अपने आराध्य से सिर्फ प्रेम करता है, इसके मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु गंतव्य सभी एक है। इसीलिए भक्ति को आध्यात्मिक जगत् का लोकतंत्र माना गया है। सूर ने दिव्य सौन्दर्य का आधार लौकिक सौन्दर्य को बनाया है और यही उनके काव्य का उत्कर्ष भी है।"

आलोचना / Criticism

www.vaniprakashan.com

वाणी प्रकाशन

ISBN 978-93-88434-38-6

आवरण : वाणी स्टूडियो

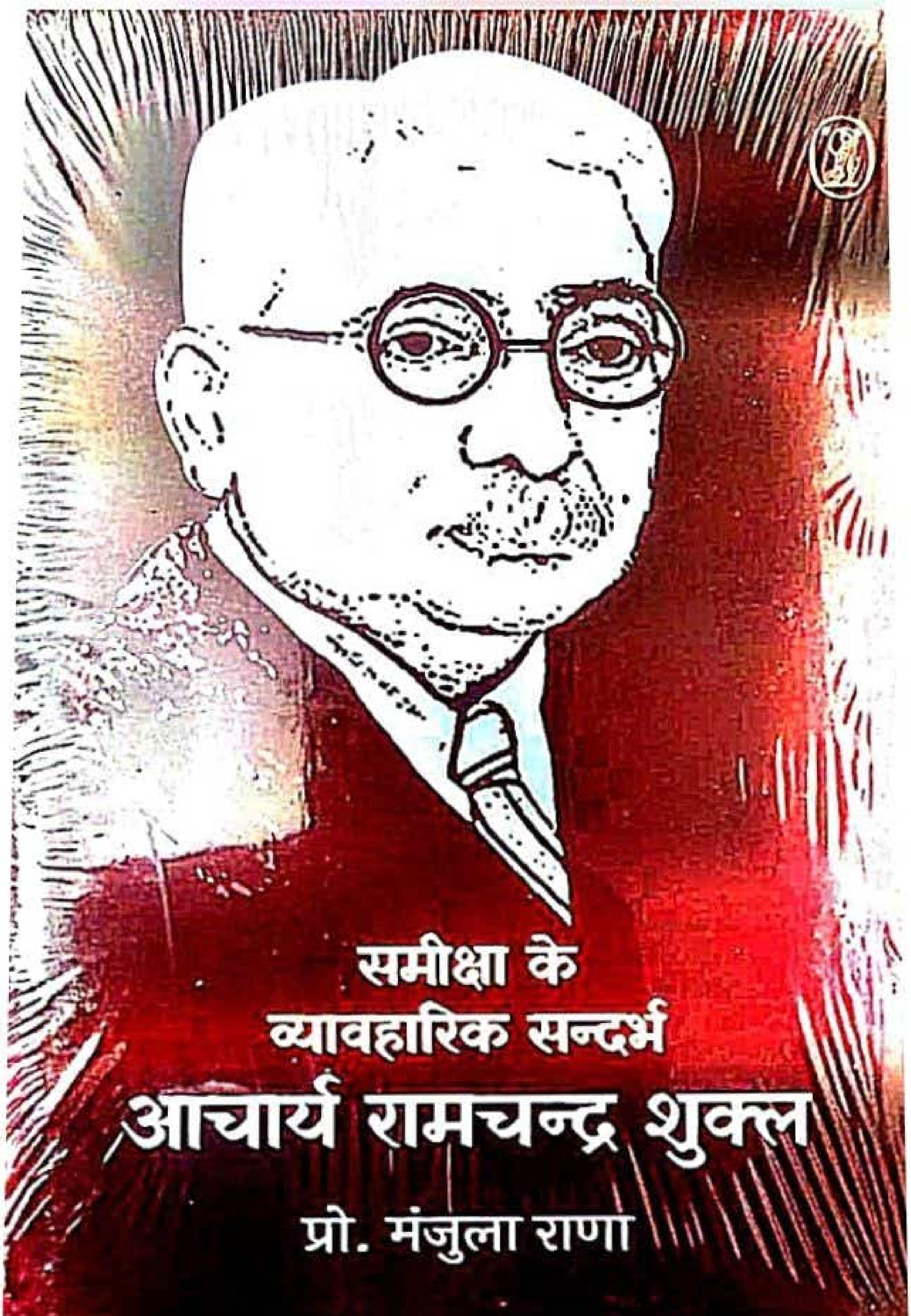
समीक्षा के
व्यावहारिक सन्दर्भ
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
प्रो. मंजुला राणा

"

शुक्ल जी काव्यानुभूति और लोकानुभूति को भिन्न कोटि का नहीं मानते, जबकि परम्परा में काव्यानुभूति को लोकोत्तर अनुभूति सिद्ध करने का अटूट आग्रह है। इनकी दृष्टि में काव्यानुभूति एक सात्त्विक मनोदशा है जो लोकव्यवहार में भी अनुभवसिद्ध है। जिस तरह लोकव्यवहार की सात्त्विक मनोदशा की पर्यवसिति सत्कर्मप्रवृत्ति में है, वैसे ही काव्यानुभूति की भी—क्योंकि जीवन का जो परम लक्ष्य है उसी में काव्य का भी योगदान है।

"

आलोचना / Criticism

वाणी प्रकाशन

www.vaniprakashan.com

ISBN 978-93-88434-37-9

E-book Available

आवरण : वाणी स्टूडियो

# पहाड़ गाथा

प्रो. मंजुला राणा

## साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित अन्य कथा साहित्य

**अंडमान तथा निकोबार की लोक कथाएँ**
संकलन : व्यासमणि त्रिपाठी
पृष्ठ : 132, मूल्य : 80 रुपये

**कन्नड़ लघु कथाएँ (कन्नड़)**
संपादक : एल.एस. शेषगिरि राव
अनुवादक : गुरुनाथ जोशी
पृष्ठ : 224
मूल्य : 25 रुपये

**चुनिंदा कहानियाँ (मलयाळम्)**
लेखक : कारूर नीलकंठ पिळ्ळै
अनुवादक : रति सक्सेना
पृष्ठ : 96, मूल्य : 60 रुपये

**चुनी हुई सिंधी कहानियाँ**
संपादक : गोविंद माल्ही तथा
कला रीझसिंघाणी
अनुवादक : मोतीलाल जोतवाणी
पृष्ठ : 212, मूल्य : 35 रुपये

**झारखंड : कथा परिवेश**
चयन एवं संपादन : ऋता शुक्ल
पृष्ठ : 228, मूल्य : 150 रुपये

**तेईस हिंदी कहानियाँ**
संपादक : जैनेंद्र कुमार
पृष्ठ : 264, मूल्य : 35 रुपये,
सजिल्द 80 रुपये

**दलित कहानी संचयन**
संपादक : रमणिका गुप्त
पृष्ठ : 400, मूल्य : 250 रुपये

**थरागीत (पूर्वोत्तर भारत की कहानियाँ)**
संपादन : कैलाश सी. बराल
अनुवादक : नरेंद्र तोमर
पृष्ठ : 148, मूल्य : 100 रुपये

**हिमालची लोक-कथाएँ**
चयन एवं संपादन : सुदर्शन वशिष्ठ
पृष्ठ : 360
मूल्य : 175 रुपये

**समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी कहानी**
संपादक : शिव.के. कुमार
अनुवादक : हरीश नारंग
पृष्ठ : 248, मूल्य : 90 रुपये

**समकालीन सिंधी कहानी-संग्रह**
संपादक : प्रेम प्रकाश
पृष्ठ : 244, मूल्य : 150 रुपये

**हिंदी कहानी-संग्रह**
संपादक : भीष्म साहनी
पृष्ठ : 400, मूल्य : 150 रुपये

**डोगरी कथा कुंज**
संपादक : धर्म चंद्र प्रशांत
अनुवादक : चंद्र शेखर शर्मा
पृष्ठ : 128, मूल्य : 125 रुपये

ISBN 978-81-260-4994-3
9788126049943

साहित्य अकादेमी

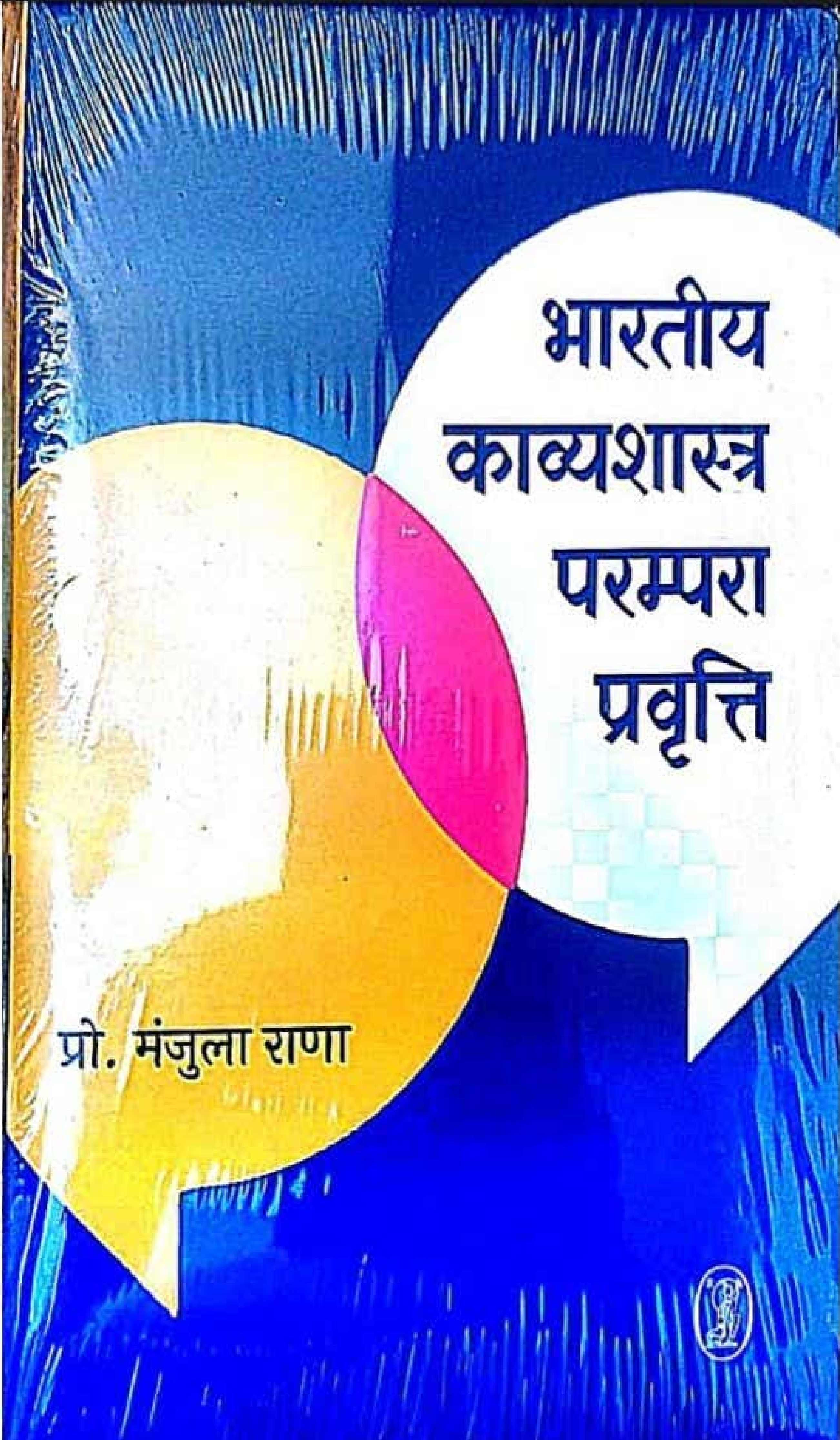
भारतीय
काव्यशास्त्र
परम्परा
प्रवृत्ति
प्रो. मंजुला राणा

"काव्य वाणी का शृंगार है। स्वरूप के विचार से 'काव्य' जितना व्यापक है, उतना ही सूक्ष्म भी। उसके सतत विकासशील रूप को लक्षणबद्ध करने के जैसे-जैसे प्रयत्न होते रहे हैं, वैसे-ही-वैसे वह लक्षण की परिधि से बाहर पड़ता रहा है। धात्वर्थ के विचार से 'काव्य' का अर्थ है—कवि द्वारा सम्पन्न किया गया समस्त कार्य। 'काव्य' कवि-कर्म से सम्बन्धित है। अस्तु, काव्य के स्वरूप को समझने के लिए 'कवि' की व्याख्या आवश्यक है।"

भारतीय काव्यशास्त्र/आलोचना
Indian Poetics/Criticism

वाणी प्रकाशन
वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसैन की कूची से
Vani Prakashan's logo is created by Artist Maqbool Fida Husain

www.vaniprakashan.com

ISBN : 978-93-89684-41-5

e-Book Available

आवरण : वाणी स्टूडियो

# वेटिंग मदर और प्रेम कहानियाँ

मंजुला राणा

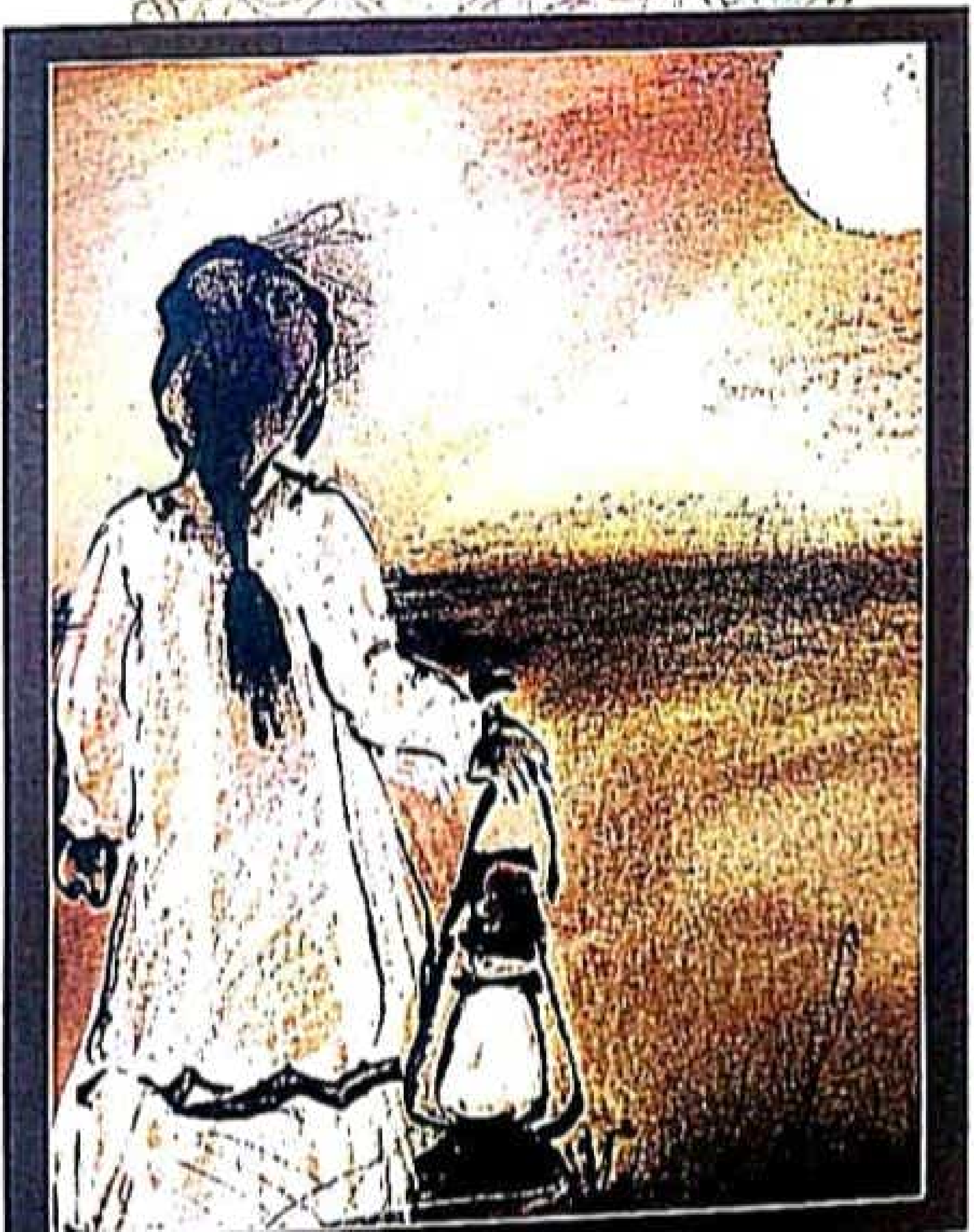

'एकाएक उसकी नज़र नीचे लिखे कथन पर पड़ती है। 'वेटिंग मदर' लिखा था उस मूर्ति के नीचे। आख़िर किसकी प्रतीक्षा में है यह स्त्री। फिर एक स्थानीय व्यक्ति से वह इस रहस्य को जानता है कि ताशकन्द के वीर जब रूस युद्ध के लिए गये तो वीरगति को प्राप्त हो गये पर यह माँ आज भी अपने उन सपूत सैनिकों की प्रतीक्षा कर रही है। उसे आज भी लगता है कि उसके बेटे अवश्य लौटेंगे। एकाएक नन्दन ज़ोर-ज़ोर से रोकर अपनी माँ को याद करता है। उसकी माँ भी तो आपदा के बाद एक शिला बन चुकी है। उसे भी यही लगता है कि चाहे किसी भी देश की हो माँ का एक ही भाव है जो किसी मुल्क की सरहद नहीं देखता। यह सम्बन्ध हर जगह एक ही है। एक अखण्ड ज्योति ताशकन्द में आज भी प्रज्वलित है उस 'वेटिंग मदर' के सम्मान में।'

– कहानी अंश

कहानी संग्रह / Collection of Stories

www.vaniprakashan.com

वाणी प्रकाशन

ISBN : 978-93-88684-52-1

E-book Available

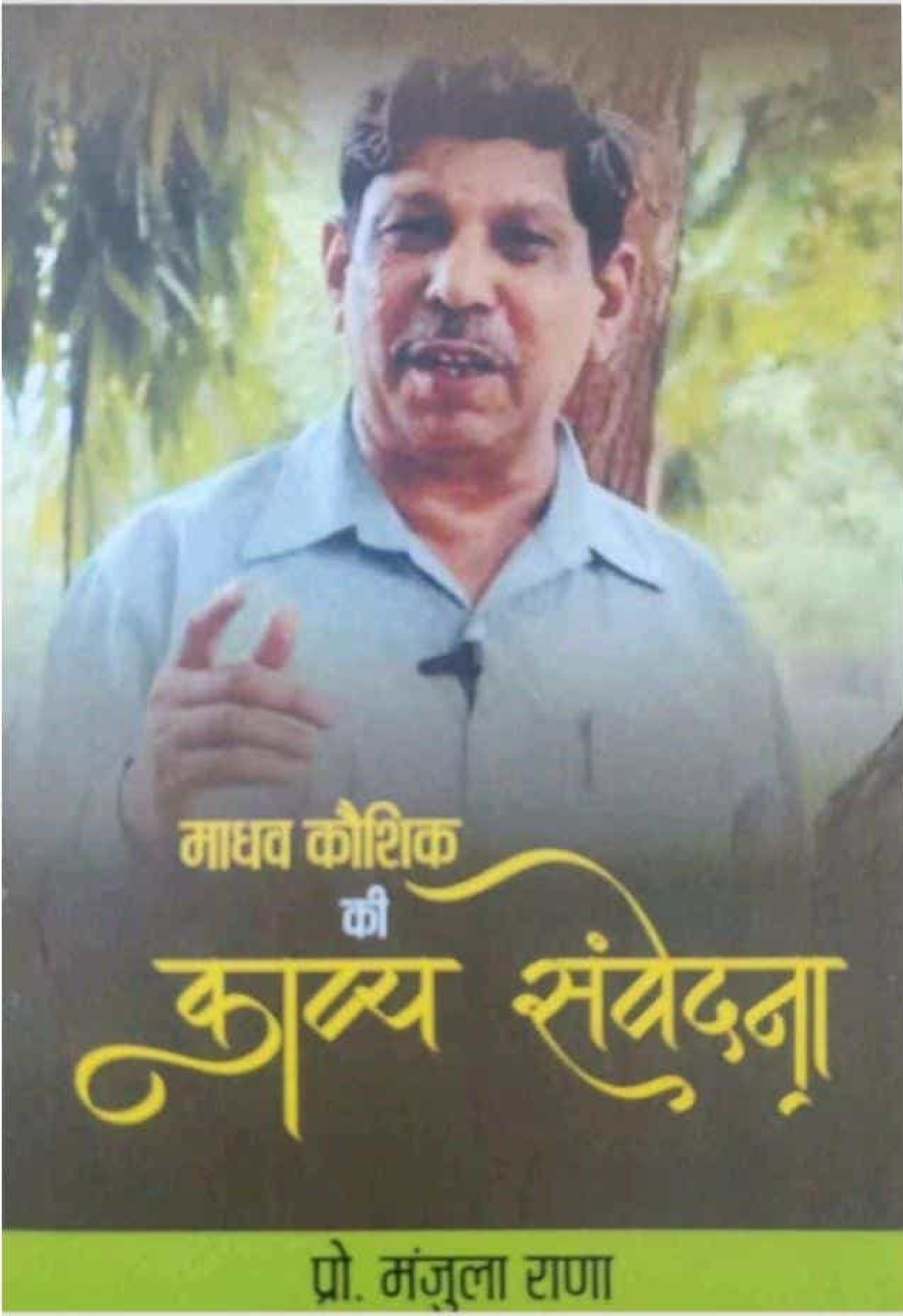
माधव कौशिक
की
काव्य संवेदना
प्रो. मंजुला राणा

विजया बुक्स
दिल्ली 110032

मूल्य : 395/-

ISBN : 978-93-88820-33-2
9 789388 820332

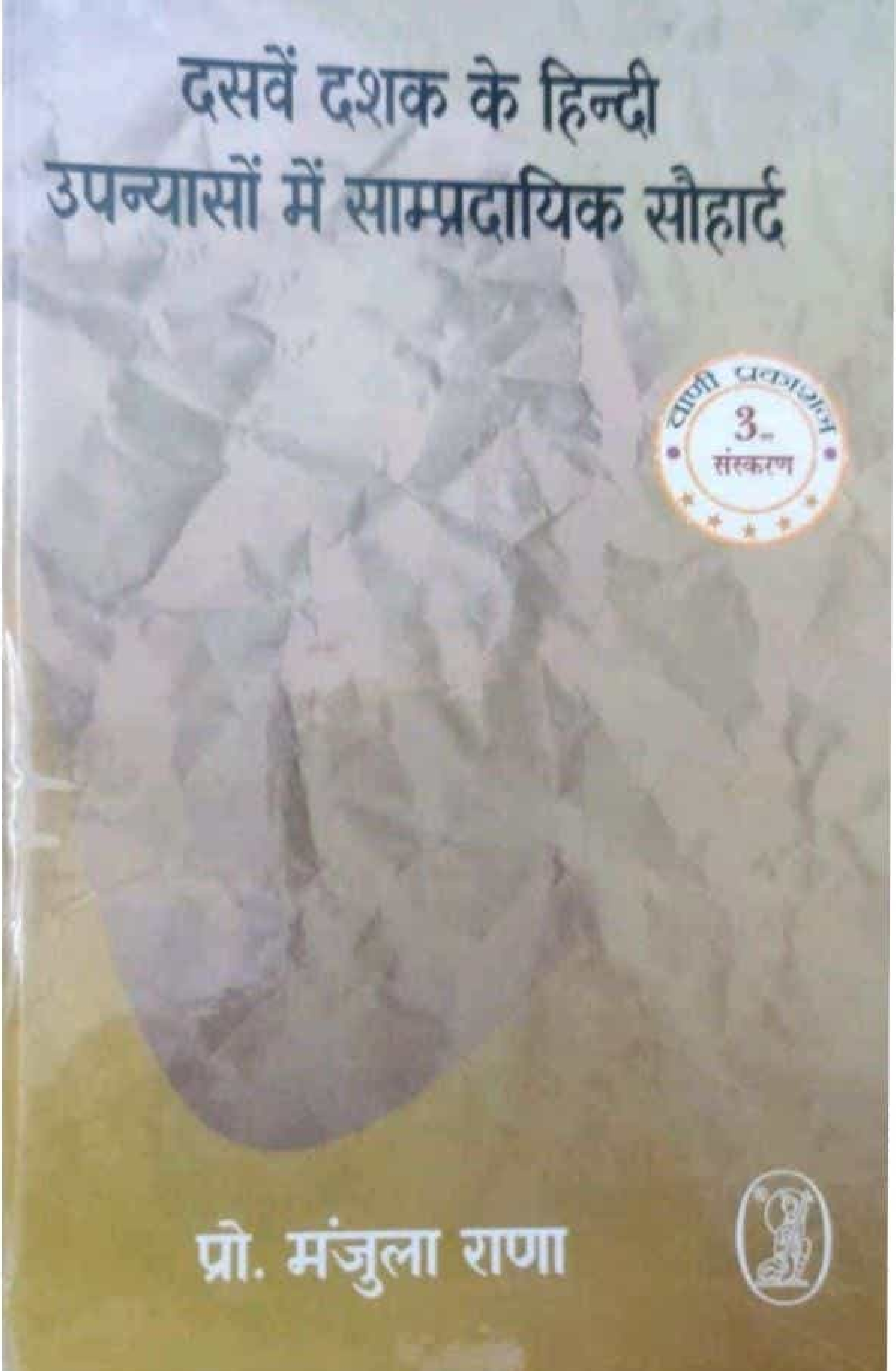
दसवें दशक के हिन्दी
उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द
3
संस्करण
प्रो. मंजुला राणा

प्रो. मंजुला राणा

प्रो. मंजुला राणा का जन्म सन् 1964 में एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ, जहाँ सामाजिक सरोकारों से इनका जन्म से रिश्ता बँधता चला गया। प्रारम्भ से ही प्रखर बुद्धि की धनी प्रो. राणा का शैक्षिक जीवन वरीयता क्रम में शीर्ष पर रहा, जहाँ एम.ए.(हिन्दी) में स्वर्ण पदक प्राप्त करके ये तत्काल गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड) में प्रवक्ता के पद पर चयनित हुई तथा अध्ययन-अध्यापन से अपने कर्म-क्षेत्र की शुरुआत करते हुए वर्तमान में हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के 'हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग' में प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। प्रो. राणा वर्ष 2010-2016 तक उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग में सदस्य के पद को भी सुशोभित कर चुकी हैं तथा वर्तमान में राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली की सदस्य हैं।

हिन्दी साहित्य जगत में इनके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं–

अन्य प्रकाशित पुस्तकें :

*1. दिनकर के काव्य में रस-योजना, 2. आँसू का भाषिक सौन्दर्य, 3. व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी, 4. उत्तरांचल का हिन्दी साहित्य, 5. उजास कहाँ है* (कहानी संग्रह), *6. पाँच प्रतिनिधि कहानियाँ, 7. कवि लक्ष्य और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ : महाकवि सूरदास, 8. भारतीय काव्यशास्त्र : परम्परा प्रवृत्ति, 9. समीक्षा के व्यावहारिक सन्दर्भ: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 10. वेटिंग मदर और प्रेम कहानियाँ।*

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित होकर आप राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय फलकों पर अपनी पुरज़ोर शैक्षिक दस्तक देती रहती हैं।

आलोचना / Criticism

www.vaniprakashan.com

वाणी प्रकाशन

ISBN 978-81-8143-863-8

आवरण : वाणी स्टूडियो

# भारतीय लोरी साहित्य कोश

(खंड–2) 2016-17

मीमांसक एवं संपादक

**डॉ. सुरेश गौतम**

पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष–हिंदी साहित्य,
अनुसंधान तथा सामग्री निर्माण विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-282005,
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार).

सह संपादक

**डॉ. वीणा गौतम**

प्राचार्य, लक्ष्मीबाई कॉलेज,
अशोक विहार, फेज-3
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

दिव्यम्

दिव्यम् प्रकाशन

*दिल्ली-110009*

# गढ़वाली

**डॉ. गुड्डी बिष्ट पंवार**
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी),
हे.न.ब.ग. विश्वविद्यालय परिसर,
पौड़ी, चौरास, गढ़वाल (उत्तराखंड)

## भाग-1 : विश्लेषण

### गढ़वाल का संक्षिप्त परिचय

भौगोलिक दृष्टि से उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग से सर्वथा भिन्न है। उसके धरातल, जलवायु, वनस्पति, जीव-जंतु और निवासियों की ऐसी अनेक विशेषताएं हैं, जो पड़ोस के मैदानी प्रदेश में नहीं मिलतीं। इसी प्रकार यहां के निवासियों की परंपराएं, धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं में भी अपनी कुछ विशेषताएं हैं।

पौराणिक परंपराओं के अनुसार, गढ़वाल के पांचों जिले पौड़ी, टिहरी, रुद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी तथा देहरादून की गणना 'केदारखंड' के अंतर्गत होती थी। ऐतिहासिक दृष्टि से देहरादून 'गढ़राज्य' का अभिन्न अंग रहा है। यहां के निवासी गढ़वाली हैं और वे गढ़वाली बोली का प्रयोग करते हैं।

एक बहु-प्रचलित परंपरा के अनुसार, विक्रम की सोलहवीं शती में जब राजा अजयपाल ने केदार भूमि की बावन या चौंसठ गढ़ियों को जीतकर यमुना से नंदा देवी तक के सारे प्रदेश पर एकछत्र शासन स्थापित किया तो यह प्रदेश गढ़ियों की प्रचुरता के कारण गढ़वाल कहलाने लगा।

### गढ़वाली लोक साहित्य : संक्षिप्त परिचय

साहित्य के क्षेत्र में शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य दो शब्द प्रचलित हैं। शिष्ट साहित्य अथवा परिनिष्ठित साहित्य यह निश्चित रूप से लिखित साहित्य होता है, जबकि लोक साहित्य अलिखित और लिखित, दोनों रूपों में मिलता है। वैसे लोक साहित्य प्रायः मौखिक ही रहा है तथा यह मौखिक परंपरा में अनवरत् चलता रहता है।

'लोक' का अर्थ जनता-जनार्दन से लिया जाता है। इसलिए लोक साहित्य का बोध ऐसे साहित्य से होता है, जिसकी रचना जनता-जनार्दन द्वारा की जाती है। इस साहित्य में जन-समूह की भावनाएं हर्ष, विषाद, प्रेम, शोक आदि होती हैं, जिनकी सामूहिक अभिव्यक्ति होती है।

2019

# भारतीय समाज और नारी

(7)

(2)

2019

डॉ. अखिलेश शुक्ल
डॉ. निशा राठौर

2019

# भारतीय समाज और नारी


**डॉ. अखिलेश शुक्ल**

भारत सरकार गृह मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित
''पं. गोविन्द वल्लभ पन्त एवार्ड'' तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा
'भारतेन्दु हरिश्चन्द एवार्ड' से सम्मानित
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
(उत्कृष्टता केन्द्र) रीवा (म.प्र.)

**डॉ. निशा राठौर**

एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
आगरा कॉलेज, आगरा



सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज
रीवा (म.प्र.)
www.researchjournal.in

ISBN-978-81-87364-78-8

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस (ISSN0973-3914)
(UGC Journal No. 40942) का वार्षिक विशेषांक

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

प्रथम संस्करण : 2019

₹ 600.00

प्रकाशक
गायत्री पब्लिकेशन्स
विन्ध्य विहार कालोनी
लिटिल चैम्पियंस स्कूल कैम्पस
पड़रा, रीवा (म.प्र.) - 486001
फोन : 7974781746
Email- gayatripublicationsrewa[illegible]rediffmail.com
www.researchjournal.in

लेजर कम्पोजिंग-
अरविन्द कम्प्यूटर्स, रीवा (म०प्र०)

इस पुस्तक को यथा सम्भव अत्यन्त शुद्ध करने का प्रयास किया गया है। फिर भी यदि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गई हो तो उसके कारण क्षति अथवा कष्ट के लिए सम्पादक, लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। [illegible]

# ध्रुवस्वामिनी का आधुनिक संदर्भ एवं नारी मुक्ति

• डॉ. गुड्डी बिष्ट, पंवार

छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद की काव्य के क्षेत्र में जितनी प्रतिभा है। गद्य को भी शिखर तक पहुंचाने का उतना ही महान कार्य उन्होंने किया है। जब हम जयशंकर प्रसाद के नाटकों की बात करते हैं तो भारतवर्ष का गौरवशाली इतिहास देखने-पढ़ने लगते हैं। प्रसाद एक कालजयी लेखक है और जब तक समाज जीवित रहेगा तब तक प्रसाद प्रासंगिक रहेंगे। कालजयी साहित्यकार का लेखन सदियाँ परिवर्तित होने पर भी यथावत रहता है। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने नाटकों में इतिहास के पन्नों को उठाकर आधुनिक समस्याओं का समाधान ढूंढा है। अद्युनातन समाज की जटिल समस्याओं का समाधान प्रसाद के नाटकों की विशेषता रही है। प्रसाद जी व्यापक अनुभूतियों के ऐसे कलाकार है जिनकी रचनाएं भारतीय सांस्कृतिक वैभव को लेते हुए भी विश्वमानव को ही केन्द्र में रखती है और प्रसाद के संस्कारी व्यक्तित्व को एक गूढ़ तथा उदात्त जीवन दर्शन देती हैं। उतार-चढ़ाव से भरे संघर्षपूर्ण जीवन में विचलित होने के अवसर अनेक आते हैं, किन्तु जीवनदृष्टि मनुष्य को स्वस्थ एवं संकल्पमय बनाती है। आत्म के प्रति यथासम्भव निर्लिप्त रचना तथा व्यष्टि को समष्टि में समाहित कर सकना ही व्यक्ति का उद्देश्य होना चाहिए। जयशंकर प्रसाद मात्र एक ऐसे रचनाकार है जिन्होंने अपनी रचनाओं में नारी जाति को सरआँखों पर रखा है। प्रसाद का प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' है जिसकी विश्वविख्यात पंक्तियाँ विश्वसाहित्य की धरोहर है। नारी जाति को लेकर विश्वसाहित्य की सर्वोत्कृष्ट यह पंक्तियाँ नारी के सम्मान एवं महत्ता की प्रतिनिधि है-

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समत में।'

अर्थात् नारी समाज की वह धुरी है जिसके बिना समाज एवं मानव जीवन

******************************

• वरिष्ठ असिस्टेंट प्रोफेसर, हे.न.ब.ग.वि. विश्वविद्यालय श्रीनगर, गढ़वाल

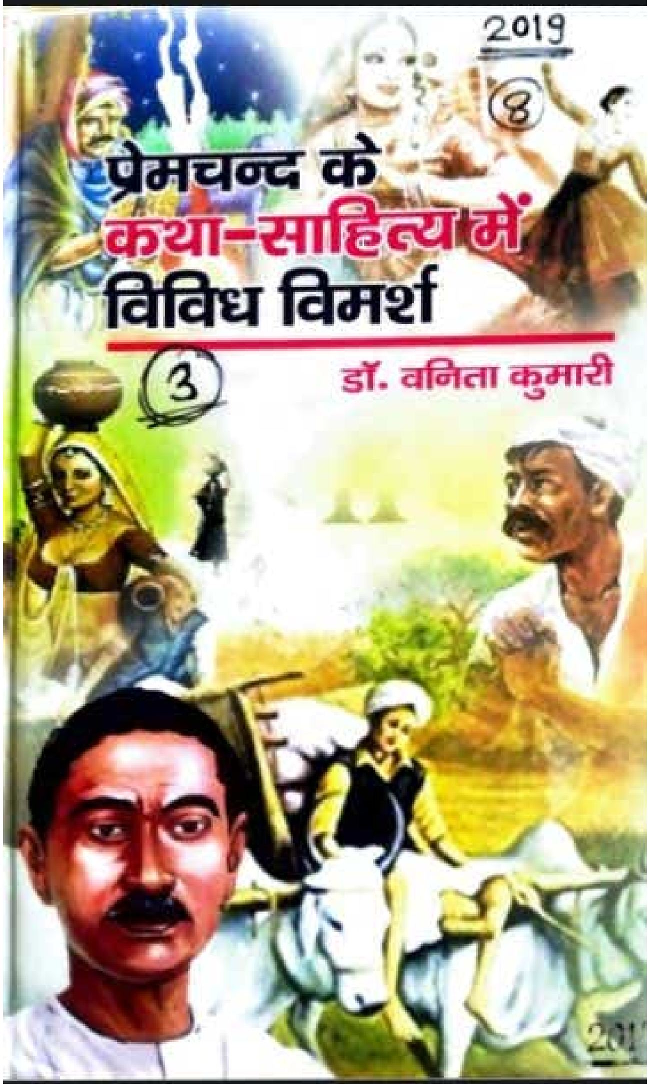


# प्रेमचंद के कथा-साहित्य में विविध विमर्श

डॉ. वनिता कुमारी

साहित्यभूमि
नयी दिल्ली (भारत)
2019

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक सम्पादक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली क्षति के लिए अक्षर संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलेक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनः प्रकाशन अथवा पुनः मुद्रण, लेखक / प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-88583-61-9

मूल्य : 600/-

प्रथम संस्करण : 2019

© डॉ. विनिता कुमारी

प्रकाशक : साहित्यभूमि
(प्रकाशक एवं वितरक)
एन-3/5ए, मोहन गार्डन,
नई दिल्ली-110059

चलभाष : +91-7290973151, 8383863238
ई-मेल : sahityabhoomi@gmail.com

लेआउट : कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली

**Premchand Ke Katha Sahitya Men Vividh Vimarsh**
by Dr. Vanita Kumari

# प्रेमचंद साहित्य में यथार्थवाद एक दृष्टि

**डॉ. गुड्डी बिष्ट पंवार**
वरिष्ठ असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
हे.न.ब.केन्द्रीय वि.वि.
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

प्रेमचंद एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी लेखनी समाज के सभी वर्गों पर अपना वर्चस्व कायम करती है। प्रेमचंद ऐसे यथार्थवादी साहित्यकार हैं जिन्होंने निम्न, मध्य एवं सामन्तीय व्यवस्था इत्यादि पर अपनी कलम चलाई है। प्रेमचंद का योगदान हिन्दी साहित्य में अपनी मौलिकता के कारण ही विशिष्ट है। सामाजिक जीवन का यथार्थ जब वीभत्स हो तब एक सजग साहित्यकार मूक नहीं रह सकता। वह बेचैनी महसूस करता है और समाज को दिखाना चाहता है कि इन कुरीतियों की जड़ कहां से पोषित एवं पल्लवित है। समाज में व्याप्त बुराइयों को देखकर प्रेमचंद की साहित्यिक चेतना कुंठित नहीं हुई है बल्कि उसमें एक तड़प और कसक जगी, जिसके परिणामस्वरूप उनका साहित्य यथार्थवाद की अभिव्यक्ति करने में मुखरित हुआ। उनकी कफन कहानी ने उस सामाजिक विद्रूपता को उजागर किया जो अत्यन्त भयावह है। मंत्र कहानी एक ऐसा संदेश समाज को छोड़ गई कि मनुष्य की परस्पर पूरकता के बावजूद भी वर्गीय भेद-भाव के कारण दुखी व्यक्ति की आतंपुकार उच्चवर्गीय समाज सुनने में बहरा साबित हुआ है। यह रचना समाज के लिए प्रेमचंद जैसे कालजयी साहित्यकार का महान संदेश है, जहां मानवीयता की मांग पुरजोर है।

साहित्यकार का लेखन उसकी विचारधारा का प्रतिबिम्ब होता है और महान साहित्यकार इन धाराओं के उद्गम का मूल स्रोत। हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक विचित्र सी बात मिलती है कि इसकी विभिन्न धाराओं के चरमोत्कर्ष का श्रेय कतिपय प्रभावशाली साहित्यकारों को ही मिला है। कबीर, सूर, तुलसी, भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, आदि ऐसे ही अमर कलाकार हुए हैं। जिन्होंने हिन्दी साहित्य की विभिन्न धाराओं और विधाओं को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया था। शुक्ल जी ने साहित्य के इतिहास लेखन, निबन्ध और आलोचना के विकास को अत्यन्त उच्च सीमा तक पहुंचा दिया था। महान साहित्यकारों की इसी परम्परा में

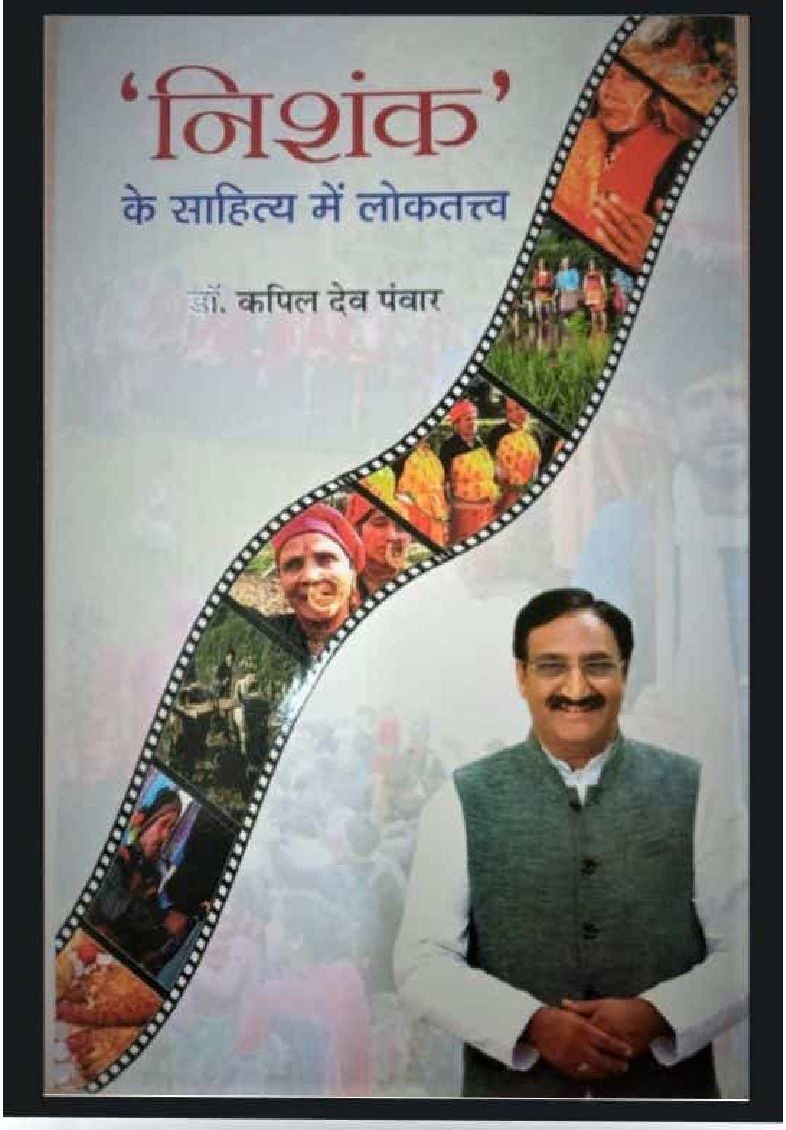


# ‘निशंक’ के साहित्य में लोकतत्त्व

डॉ. कपिल देव पंवार

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.
4/19 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2022
मूल्य • पाँच सौ रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

'NISHANK' KE SAHITYA MEIN LOKATATTV
by Dr. Kapil Dev Panwar
₹ 500.00
Published by Prabhat Prakashan Pvt. Ltd., 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
e-mail: prabhatbooks@gmail.com
ISBN 978-93-90923-55-7

# भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें


## डॉ. कुसुम डोबरियाल

उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
परिसर, पौड़ी गढ़वाल – 246001


With best compliments to
Dr. Bindu Yadav


**राजमंगल प्रकाशन**

An Imprint of **Rajmangal Publishers**



**मूल्य :** 229/- रु.

**ISBN : 978-9394920378**

*Published by :*

**Rajmangal Publishers**

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Sangwan, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA
**Cont. No. +91- 7017993445**

www.rajmangalpublishers.com
rajmangalpublishers@gmail.com
sampadak@rajmangalpublishers.in

**प्रथम संस्करण :** अगस्त 2022 – पेपरबैक

**प्रकाशक : राजमंगल प्रकाशन**

राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,

सांगवान, क्वार्सी, रामघाट रोड,

अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत

**फ़ोन :** +91 - 7017993445

**First Published :** Aug. 2022 - Paperback
**Printed by :** Thomson Press India LTD, Repro India LTD & Manipal Tech LTD
**eBook by :** Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)



**Copyright ©** डॉ. कुसुम डोबरियाल

[illegible]

# अध्याय 18:
# भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी तथा महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सम्बन्धी चिन्तन

**डॉ बिन्दु यादव**

सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग

हे0न0ब0ग0वि0वि बी0जी0आर0 परिसर पौड़ी गढ़वाल

(binduyadav111@gmail.com)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् एवं सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" जैसी भावना भारतीय संस्कृति में नारी के गौरवपूर्ण स्थानको प्रदर्शित करती है । वेदों एवं पुराणों की इस संस्कृति में वर्णित नारी आधुनिक नारी से भिन्न सबला, पराक्रमी, सौभाग्यवती एवं संयमी है। वैदिक समाज में नारी एवं पुरूष को समान अधिकार प्राप्त थे। नारी पुरूष की सहयोगिनी थी। वह युद्ध क्षेत्र में भी पुरूष के साथ जाया करती थी। सतयुग में रानी कैकयी के राजा दशरथ के साथ युद्ध क्षेत्र में जाने की कथा सर्वविदित है। रानी कैकयी ने राजा दशरथ के रथ के पहिये को साधने के लिये अपनी उंगली काट कर प्रयोग की थी जिससे उनकी वीरता, पतिभक्ति एवं तीक्ष्ण बुद्धि का प्रमाण मिलता है। वैदिक काल में नारी को परिवार एवं समाज में सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता था। धार्मिक कार्यों में भी पति के साथ पत्नि की उपस्थिति वांछनीय थी। प्राचीन भारत में स्त्रियों को आदि शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्रियां देवी कही गयी हैं और उन्हें मात्र शक्ति के रूप में शक्ति का प्रतीक माना गया है।... संसार में जितना ऐश्वर्य और सौन्दर्य है वह श्री और लक्ष्मी के रूप में जाना जाता है। इन दोनो को विष्णु की पत्नि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इससे स्त्री के गौरव और महत्व का बोध होता है।'

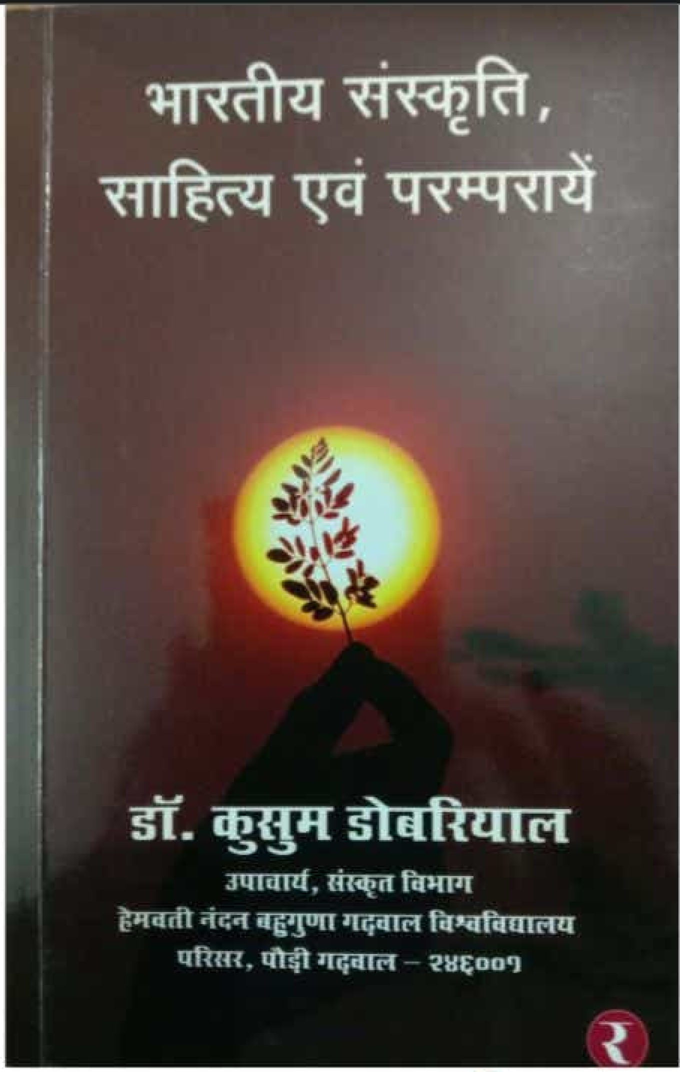


Scanned with OKEN Scanner

# भारतीय संस्कृति,
# साहित्य एवं परम्परायें

---

**डॉ. कुसुम डोबरियाल**

उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
परिसर, पौड़ी गढ़वाल – 246001

With best compliments to
Dr. Lavkesh Kumar

राजमंगल प्रकाशन

An Imprint of **Rajmangal Publishers**

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रमणिका


| शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| अभिमत | 1 |
| प्राक्कथन | 6 |
| अध्याय-1 : | 11 |
| गढ़वाली संस्कृति: एक अंतरावलोकन | 11 |
| अध्याय-2 : | 25 |
| रामायण कालीन संस्कृति एवं प्राकृतिक सम्पदा | 25 |
| अध्याय 3 : | 31 |
| जौनपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक "मौण मेला" की परम्परा का एक अध्ययन | 31 |
| अध्याय 4 : | 41 |
| उत्तराखण्ड की पारम्परिक आयुर्वेदिक चिकित्सा परम्परा: एक संक्षिप्त अध्ययन | 41 |
| अध्याय 5: | 52 |
| कुमाऊं संस्कृति में "हिलजात्रा उत्सव" का महत्व-एक अध्ययन | 52 |
| अध्याय 6 : | 58 |
| भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परंपरागत आहार | 58 |
| अध्याय-7: | 67 |
| "[illegible]ईनीय महाकाव्य" में अलंकार तत्व विवेचन | 67 |
| अध्याय-8 : | 77 |
| "देवी कुंजापुरी सिद्धपीठ" एवं क्षेत्र के पवित्र उपवनों में जैव विविधता का एक संक्षिप्त अध्ययन। | 77 |


Scanned with OKEN Scanner


| | |
|---|---|
| अध्याय 9: | 86 |
| बेहतर स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद और योग का उपयोग: एक समीक्षा | 86 |
| अध्याय 10: | 93 |
| पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के "नागदेव मन्दिर" के पवित्र उपवन व वन क्षेत्र का संक्षिप्त अध्ययन | 93 |
| अध्याय 11 : | 105 |
| अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत महाकाव्यों में राष्ट्रीय भावना | 105 |
| अध्याय 12: | 115 |
| परम्परा एवं आधुनिकीकरण | 115 |
| अध्याय 13: | 148 |
| "भारतीय संस्कृति" का विकास एवं चुनौतियाँ | 148 |
| अध्याय 14: | 153 |
| "भारतीय संस्कृति" का विश्वव्यापी प्रभाव: श्रीमद्भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में | 153 |
| अध्याय 15: | 157 |
| भारतीय संस्कृति की एक झलक | 157 |
| अध्याय 16 : | 162 |
| हिंदी साहित्य: भारतीय संस्कृति एवं परम्पराए | 162 |
| अध्याय 17 : | 170 |
| "संस्कृत वाङ्मय" में वर्णित नाट्यशास्त्र की उपयोगिता | 170 |
| अध्याय 18: | 175 |
| भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी तथा महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी सम्बन्धी चिन्तन | 175 |

# अध्याय 16 :
# हिंदी साहित्य: भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएँ

**लवकेश कुमार**
सहायक प्राध्यापक हिंदी
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर
पौड़ी गढ़वाल -२४६००१ - उत्तराखंड
(lavakesh88kumar@gmail.com)

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में देखा जाए तो भारतीय संस्कृति विश्व के प्राचीनतम और सृजनात्मक संस्कृतियों में से एक है जहाँ विविधता में एकता के भाव समाहित है। भारतीय समाज अनेक जाति-धर्म-क्षेत्र और भाषा में बटे होने के बाद भी यहाँ के तीज-त्योहारों में अपनापन, भाई-चारे के साथ समरसता के भाव दिखाई पड़ते हैं। जहाँ विदेशियों द्वारा भारतीय संस्कृतियों को विध्वन्स करने के बाद भी भारतीय समाज उनको अपनी संस्कृतियों में समाहित कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तानांतरित करती चली आ रही है। यह भारतीय संस्कृति की महानता है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का जो चित्र उकेरा गया है उसमें सभी जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-झरना, पहाड़-समुद्र के साथ-साथ पंचतत्वों का विशेष महत्त्व है, जो ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की दृष्टि से विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी, ने'अशोक के फूल' और 'कुटज' जो निबन्ध लिखें हैं। वह भारतीय संस्कृति और साहित्य का परिचायक है।

**'अशोक के फूल'** निबन्ध में अशोक वृक्ष की पूजा हजारो-हजारो साल पहले गंधर्वों और यक्षों द्वारा शुरू की गयी थी। वास्तव में यह पूजा

Chapter in Book
भारतीय संस्कृति के विविध आयाम
सम्पादन : कमलेश शाक्य एवं महेशानन्द नौडियाल
कुमुद पब्लिकेशन, दिल्ली
ISBN: 978-93-92023-1
202-207

26

# संस्कृत कवि डॉ0 अशोक कुमार ड़बराल के काव्य में हिमालय का वर्णन

–डॉ. ललिता एवं डॉ. कुसुम डोबरियाल*

देवात्मा हिमालय इस ब्रह्माण्ड़ का सुरम्य प्रकाष सौन्दर्य का मुर्तिमान कलेवर उत्साह एवं धैर्य का उपमान शक्ति का पर्याय और विराट पुरूष की विराटता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हिमालय ऐश्वर्यमान होने के कारण महेश्वर है, समसत में व्याप्त होने के कारण विष्णु है, और जगदधात्री इस वसुन्धरा का धाता भी है. भगवान विष्णु स्रष्टा है और लक्ष्मी सृष्टि है। भगवान हरि भूधर हिमालय है तो यह लक्ष्मी सृष्टि है, भगवान हरि भूधर हिमालय है तो यह लक्ष्मी भूमि है, अथर्ववेद की शैन की शारवान्तर्गत मुण्डकोपनिषद में जिस परमात्मतत्व की बात वैदिक ऋषि कर रहे हैं वह विष्णु का अंशरूप हिमालय ही है।

यथा–

*अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्यात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः।*
*अतश्च सर्वा ओषधयो रसाश्च येनैष भूतैस्तिष्ठतेह्यन्तरात्मा।।*

देव, गन्धर्व, किन्नर यक्ष, भूत, प्रेत सभी इस राजा की प्रजा है। यही स ब्रह्मा का मानमर्दन हुआ, यही से दक्ष आदि अभिमानी का अपमान भी हुआ। इन्द्र धनुष

* संस्कृत– विभाग हे0नं0ब0ग0के0वि0वि0 परिसर पौड़ी उत्तराखण्ड 246001
E-mail: kusumdobriyal62@rediffmail.com

Chapter in Book :
भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास स्वतन्त्रता से वर्तमान तक
-सम्पादन- विरेन्द्र कुमार सैनी, वरुण कुमार
World Lab Publication: ISBN. 978-93-90734-14-6

# प्रगतिशील भारतीय शिक्षा प्रणाली और आजादी का अमृतमहोत्सव: शिक्षकों के लिए नए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक

डॉ0 कुसुम डोबरियाल
उपाचार्य संस्कृत
हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल

शिक्षा और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक स्वस्थ एवं सुसंस्कृत समाज की परिकल्पना शिक्षा के ही माध्यम से अपेक्षित है। नई पीढ़ी को प्रदान की जाने वाली शिक्षा ही सामाजिक संस्कृति, सभ्यता, आत्मनिर्भरता, प्रवीणता एवं व्यवसाय की जन्मदात्री है। यह शिक्षा ही है जो समाज में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करती है। महान दार्शनिक अरस्तू ने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि "एक शिक्षित और अशिक्षित व्यक्ति में उतना ही अन्तर है जितना जीवन और मृत्यु में"[1]

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षानीति पर निर्भर करती है। अतः तत्सम्बन्धी नीति निर्धारकों का यह दायित्व बनता है कि अपने सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप शिक्षा नीति विकसित की जाय। भारतवर्ष में भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भिन्न–भिन्न चरणों में तत्कालीन आवश्यकतानुसार शिक्षानीति का निर्धारण किया गया। भारतीय संविधान निर्माताओं ने (वर्तमान स्थिति) शिक्षा के महत्व को अंगीकृत करते हुए इसे समवर्ती सूची में सम्मिलित किया है। अतः केन्द्र सरकार और राज्य सरकशरों को इस विषय में अपने–अपने स्तर से नियम का कार्य सम्पादित कर सकते हैं।[2]

# अध्याय- 1 :

# गढ़वाली संस्कृतिः एक अंतरावलोकन

**डॉ० कुसुम डोबरियाल**
उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर
पौड़ी गढ़वाल – २४६००१
(kusumdobriyal62@rediffmail.com)

मध्य हिमालय का यह भू भाग " गढ़वाल" अनेक दृष्टियों से अपनी पौराणिक तथा ऐतिहासिक कीर्ति कथाओं तथा गौरवशाली परम्पराओं के लिए प्रतिश्रुत रहा है। हरिद्वार, कुशावर्त, पिल्वक तथा कनखल से लेकर श्वेतनताक पर्वत के विस्तृत भूभाग को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। इस पावन धाम को अनेक ऋषियों, महर्षियों, तथा संतों ने आसेवित किया। भारतीय धर्म दर्शन तथा संस्कृति और वांग्मय के प्रवर्तक "शंकराचार्य" रामानंद, निम्बार्क, तथा वल्लभ आदि धर्माचार्यों ने इस भूमि को अपनी आराधना - उपासना के लिया वरण किया।

प्राचीन काल से ही केदारखंड का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्व रहा है। वेदों और पुराणों में मध्य हिमालय के इस भू भाग की गौरव गाथा वर्णित की गयी है जिसे पंवार वंशीय महाराजा अजयपाल ने एक राज्य के रूप में स्थापित किया। गढ़ों की प्रचुरता के कारण इसका नाम "गढ़वाल" पड़ा। यह भूमि पुराकाल से अव्यक्त ब्रह्म की सत्ता के कारण सदैव पवित्र मानी जाती रही है। वेद और पुराण साहित्य में "गढ़वाल" को स्वर्गभूमि नाम से उद्धृत किया है। हिमालय की प्राचीनता के सम्बन्ध में केदारखंड में शिव द्वारा कहा गया है:

"पुरातनोयथाहं वै तथा स्थानमिदं क्रिल्।

# अध्याय- 7:
# "रावणार्जुनीयं महाकाव्य" में अलंकार तत्त्व विवेचन

**दीपक कुमार द्विवेदी एवं कुसुम डोबरियाल**
संस्कृत विभाग
हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय, बी.जी.आर.परिसर पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड
(19deepakdwivedi91@gmail.com)

सर्वविदित है कि भारतीय संस्कृति के मूलाधार के रूप में देववाणी संस्कृत का विपुल एवं समृद्ध साहित्य विश्वभर में विशिष्ट स्थान रखता है। वैदिक काल से अद्य पर्यन्त यह हमें विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है। यथा वैदिक साहित्य के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यकादि तथा लौकिक साहित्य अन्तर्गत महाकाव्य, नाटक, चम्पूकाव्य आदि के रूप में। वस्तुतः किसी भी भाषा के साहित्य को परखने के लिये उसकी आलोचना अपेक्षित है क्योंकि इसके अभाव में न तो हम उसके गुणों से परिचित हो सकेंगे और न हि उसके दोषों से। अतः कवि की रचना काव्य की कसौटी पर खरी उतरती है कि नही इस सन्दर्भ में विद्वान काव्यशास्त्रियों, समीक्षकों, तथा आलोचकों द्वारा लक्ष्य ग्रन्थों को आधार बनाकर लक्षण ग्रन्थों की गयी। काव्य क्या है? तथा काव्य कैसा होना चाहिये? इस सन्दर्भ में आचार्य भरत, भामह आदि से प्रारम्भ कर इस समृद्ध परम्परा का निर्वहन अद्य पर्यन्त काव्यशास्त्रीय वेत्ताओं द्वारा होता आ रहा है। जिसके फलस्वरूप इन आचार्यों के कुछ सिद्धांत विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होते है। जिनमें रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य प्रमुख हैं। इस क्रम में काव्यशास्त्र के इन प्रमुख सिद्धांतों में अलंकार सिद्धांत का अत्यन्त विशिष्ट स्थान रहा है।

# "भारतीय संस्कृति" का विश्वव्यापी प्रभाव: श्रीमद्भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में

**डॉ कुसुम डोबरियाल**

उपाचार्य संस्कृत

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल - २४६००१ उत्तराखंड

(kusumdobriyal62@rediffmail.com)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। **"सा प्रथमा विश्ववारा"** - यजुर्वेद की यह उक्ति विश्वव्यापी बनने की बात स्वीकार करती है। यह विश्व संस्कृति अन्य संस्कृतियों से श्रेष्ठतर संस्कृति है। भारतीय संस्कृति को "देव संस्कृति " कह कर भी सम्मानित किया गया है। भारतीय संस्कृति का प्रत्येक पहलू विज्ञानं सम्मत भी है तथा हमारे दैनिक जीवन पर भी प्रभाव डालने वाला है। "ऋग्वेद"[1] की उषा के समान यह भारतीय संस्कृति **"युवती पुराणी "** कही जा सकती है । यह संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो पुराने होते हुए भी नए हैं । इस संस्कृति की जड़ में वे सिद्धांत है जिनमे किसी देश - विदेश या जाति विशेष का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति का सतत कल्याण हो सकता है ।

भारतीय संस्कृति मानव के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है। इसी की परिधि में **"वसुधैव कुटुंबकम "** के समस्त सूत्र आ जाते हैं । भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों के समक्ष यही दृष्टिकोण उपस्थित था कि किस प्रकार मानव समाज का कल्याण हो एवं मनुष्य सुखमय जीवन यापन करे । आर्ष मुनियों के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा दार्शनिक आदि सिद्धांत ही भारतीय संस्कृति के प्राण हैं तथा देशकालादि से अबाधित हैं।

मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही भारतीय संस्कृति प्राचीन होते हुए भी आज वर्तमान है। समय के प्रभाव से चाहे उसका स्वरुप

# ब्रह्माण्डमहापुराण

## एक परिचय

**डॉ. मिथिलेश कुमार**

सहायक अध्यापक, संस्कृत

जनता इण्टर कॉलेज क्यारी, मटियाली

**डॉ. (श्रीमती) कुसुम डोबरियाल**

सह-आचार्य संस्कृत

हे.नं.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर

**नामः** डॉ. मिथिलेश कुमार

**जन्मः** 14 जनवरी 1990,

**जन्म स्थानः** देवप्रयाग टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड

**शिक्षाः** आचार्य (संस्कृत साहित्य), एम.ए. संस्कृत, बी.एड., यू.जी. सी. नेट, पीएच. डी.।

**सम्प्रतिः** सहायक अध्यापक संस्कृत, जनता इंटर कॉलेज क्यारी मठियाली, टिहरी गढ़वाल। लेखक की प्रारंभिक शिक्षा देवप्रयाग से हुई है। प्रारम्भ से ही संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि रहने के कारण आचार्य संस्कृत और फिर हेमवती नन्दन गढ़वाल विश्वविद्यालय से संस्कृत भाषा मे पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। विभिन्न शोधपत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशित कर चुके हैं। वर्तमान में संस्कृत भाषा के उन्नयन हेतु संस्कृत सेवा में समर्पित हैं।

**नामः** डॉ. (श्रीमती) कुसुम डोबरियाल

**जन्मः** 04–04–1962

**जन्म स्थानः** पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड )

डॉक्टर कुसुम डोबरियाल ने सन १९८४ में हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा सन 1989 में राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान द्वारा पोषित छात्रवृत्ति पाकर हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि प्राप्त की। डॉक्टर कुसुम डोबरियाल सन 1992 से निरंतर इसी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य कर रही हैं तथा सन 2019 में उपाचार्य के पद पर प्रोन्नत हुई हैं। आप संस्कृत साहित्य, विशेषतः पुराणों के अध्ययन पर शोध कार्य कर रही हैं। आपने 3 शोध छात्रों को पीएच.डी. की उपाधि हेतु निर्देशित किया है। वर्तमान में गढ़वाल विश्वविद्यालय के पौड़ी परिसर में विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य रत हैं।

राजमंगल प्रकाशन

eBook Available

Rs. 269/-

पौराणिक अध्ययन

ISBN : 978-93-94920-23-1

9 789394 920231

www.rajmangalpublishers.com

# भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्परायें

**डॉ. कुसुम डोबरियाल**
उपाचार्य, संस्कृत विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
परिसर, पौड़ी गढ़वाल – २४६००१

**नामः** डॉ. (श्रीमती) कुसुम डोबरियाल

**जन्मः** 04–04–1962

**जन्म स्थानः** पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड )

डॉक्टर कुसुम डोबरियाल ने सन १६८४ में हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा सन 1989 में राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान द्वारा पोषित छात्रवृत्ति पाकर हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि प्राप्त की। डॉक्टर कुसुम डोबरियाल सन 1992 से निरंतर इसी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य कर रही हैं तथा सन 2019 में उपाचार्य के पद पर प्रोन्नत हुई हैं। आप संस्कृत साहित्य, विशेषतः पुराणों के अध्ययन पर शोध कार्य कर रही हैं। आपने 3 शोध छात्रों को पीएच.डी. की उपाधि हेतु निर्देशित किया है। वर्तमान में गढ़वाल विश्वविद्यालय के पौड़ी परिसर में विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य रत हैं।


Rs. 229/-

संस्कृति अध्ययन

ISBN : 978-93-94920-37-8

9 789394 920378

राजमंगल प्रकाशन

eBook Available

www.rajmangalpublishers.com

rajmangalpublishers r_publishers

Image of Women in

# THE PLAYS OF T.S. ELIOT

Dr. Poonam Bisht Rawat

**Publisher**
**Pallwi Prakashan**
D-750, Gali Nu. 4, Ashok Nagar,
Shahadara, Delhi-110093
Mo. : 08802579680, 09856848581
**E.mail :** yugantar3180@gmail.com

© : **Author**

**ISBN :** 978-81-927481-4-6

**Price** : 295.00
**Edition** : 2019

**Composing**
Prince Computers, Delhi-110094
**Printer**
Rajoria Printers, Delhi-32

# Relevance of Vedic Environmental Ethics in the Contemporary World

*Proving the Environmental Ethics and Crisis*

*Edited by*
**Dinesh Prasad Saklani**

Scanned with CamScanner

9. **Status of Water in Tarkeshwar Sacred Grove Region of Garhwal Himalaya, Uttarakhand** 77
Purna Jana *and* N.P. Todaria

10. **Environmental Degradation in the Last Two Centuries in Uttarakhand** 85
Dhirendra Datt Dangwal

11. **A Study of Noise Level in Srinagar (Garhwal) Town of Uttarakhand State** 103
Mohan Singh Panwar

**Section II — Hindi**

12. **पर्यावरण समृद्धि एवं संरक्षण में आपःतत्त्व की प्रधान भूमिका** 117
रूप किशोर शास्त्री

13. **वैदिक साहित्य और पर्यावरण संरक्षण** 124
आशुतोष गुप्त

14. **अथर्ववेदीय पृथ्वी सूक्त में वर्णित प्रकृति एवं पर्यावरणीय घटकों का सह-सम्बन्धः प्राणि-जगत् एवं वनस्पति जगत् के विशेष सन्दर्भ में** 133
प्रेम बहादुर, दिनेश प्रसाद सकलानी

15. **वेदों में पर्यावरणीय संचेतना** 144
धर्मेन्द्र यादव, डी.पी. सकलानी

16. **वैदिक जन एवं उनका पर्यावरणीय दृष्टिकोण** 160
आकांक्षा राय

17. **पर्यावरण परिरक्षण-धरती माता के सम्मान में पृथ्वी सूक्त** 176
नीलम त्रिवेदी

18. **पर्यावरण प्रदूषण नियन्त्रण में वैदिक विधानों की भूमिका** 184
कमलेश कुमार गौतम, सतीश चन्द्र सिंह

Scanned with CamScanner

# 13

# वैदिक साहित्य और पर्यावरण संरक्षण

आशुतोष गुप्त

पर्यावरण में इस चराचर जगत् के सभी संघटकों को सम्मिलित किया जाता है। मनुष्य को छोड़कर अन्य सभी संघटक प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए पर्यावरण को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाते हैं। जबकि मृषावादी मनुष्य अपने बुद्धिबल से प्रकृति के समक्ष चुनौतियाँ स्थापित करता रहा है। पहले वृक्षों को काटता है पुनः प्रदूषण होने पर वृक्षारोपण करके समाधान ढूढ़ता है। अनेकानेक प्रकार के रसायनों का प्रयोग कर फसलों के उन्नत संस्करण का निर्माण पुनः वे रसायनजनित अन्न बीमारियों के कारण बनते देखे गए है। बीमारियों से रक्षा के लिए नयी नयी औषधियों का निर्माण पुनः यही औषधियाँ मनुष्य शरीर में प्रतिक्रियात्मक प्रभाव दिखाती है। औद्योगीकरण के कारण कलकारखानों से निकलने वाला प्रदूषण धरती, आकाश, जल, वायु सबको प्रदूषित कर रहा है, मिट्टी विषाक्त हो रही है, जल अपेय हो रहा है तथा वायु जहरीली होकर समस्त पादप, जीव जगत् को अनेकानेक बीमारियों से युक्त कर रहा है। इन सभी दोषों के मूल में मनुष्य है, वह प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने में लगा है तथा अपने ही भविष्य को अन्धकारमय बना रहा है। यदि मनुष्य सुधर जाय तो सारा संसार ही सुन्दर व प्रदूषणमुक्त हो जाए। आवश्यकता है मनुष्य निर्माण की, तदर्थ अच्छे संस्कारों की आवश्यकता है उत्तम शीलसंपन्न आचरणयुक्त मनुष्य प्रकृति के साथ दोहन बुद्धि से कार्य न कर उसका उसी प्रकार उपयोग करेगा जैसे मधुमक्खी पुष्पों से शहद

Scanned with CamScanner

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
अष्टम पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में यज्ञ

डॉ० शिवशंकर मिश्रः

Scanned with CamScanner

10. पञ्च महायज्ञ एवं उनकी प्रासंगिकता का निर्धारण
*डॉ. रामबहादुर शुक्ल* 65

11. वेदास्तु यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः
*डॉ. शिवशंकर मिश्र* 79

12. यज्ञ परम्परा एवं उसका महत्त्व
*डॉ. श्रीमती कमला चौहान* 86

13. श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञस्वरूप
*डॉ. आशुतोष गुप्त* 92

14. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः
*डॉ. राधेश्याम गंगवार* 99

15. याज्ञिकी पर्यावरणीय अवधारणा
*डॉ. मुकेश कुमार* 105

16. वैदिक यज्ञ-सर्वाङ्गीण समृद्धि का साधन
*डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी* 116

17. यज्ञ से ही विज्ञान का उद्भव
*विष्णु प्रसाद सेमवाल* 123

18. यज्ञ और वृक्ष
*डॉ. सविता भट्ट* 130

19. यज्ञ स्वर्ग्य नौका
*डॉ. शालिनी त्रिपाठी* 137

20. यज्ञ के प्रकार और उसकी विशेषताएँ
*डॉ. रामकिशोर मिश्र* 146

21. नाट्यशास्त्रः एक महायज्ञ
*डॉ. अजीत पंवार* 148

22. पंचमहायज्ञों की विवेचना व शिवपुराण
*महेश दुर्गापाल* 155

23. यज्ञ में पितृ यज्ञ की उपादेयता
*द्वारिका प्रसाद नौटियाल* 161

Scanned with CamScanner

# 13

# श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञस्वरूप

डॉ. आशुतोष गुप्त

यज्ञ शब्द यज् धातु से निष्पन्न है, जिसके त्रिविध अर्थ हैं- देवपूजा, संगतिकरण और दान। यज्+(भावे)नङ, याग या मख, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य, पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या भक्ति सम्बन्धी क्रिया प्रत्येक गृहस्थ विशेषतः ब्राह्मण को प्रतिदिन पाँच ऐसे भक्तिपरक कृत्य करने पड़ते हैं, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, और नृयज्ञ समष्टि रूप में पञ्चमहायज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ अग्नि और विष्णु का नाम भी है। त्यागपूर्वक पूजा करना भी यज्ञ है। निष्कामभाव से किये गये शास्त्रविहित सभी शुभकर्म यज्ञ हैं। यज्ञों का विशेष उपदेश भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय में किया है। भगवान् कहते हैं कि केवल यज्ञ के लिये कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म विलीन हो जाते हैं, अर्थात् बन्धनकारक नहीं होते हैं-

**गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।**
**यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते।।**[1]

जिसकी आसक्ति सर्वथा नष्ट हो गयी है, जो देहाभिमान और ममता से रहित हो गया है, जिसका चित्त निरन्तर परमात्मा के ज्ञान में स्थित रहता है, ऐसा केवल यज्ञ संपादन के लिये कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म भलीभाँति विलीन हो जाते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ को अत्यन्त श्रेष्ठ कहा है क्योंकि सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं-

**श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप।**
**सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।**[2]

---

1. श्रीमद्भगवद्गीता - 4/23
2. वही - 4/33

Scanned with CamScanner

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
तृतीय पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में गायत्री

डॉ० शिवशंकर मिश्रः

Scanned with CamScanner

10. गायत्री छन्दसां माता
डॉ० शिवशंकर मिश्र 52

11. गायत्री परमो मन्त्रः
डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा 61

12. गायत्रीमन्त्रार्थ विचार
डॉ० रामभद्र दास श्री वैष्णव 67

13. गायत्री मन्त्र मीमांसा
डॉ० करुणानन्द मुखोपाध्याय 69

14. परात्पर ब्रह्म का प्रत्यायक गायत्री महामन्त्र
डॉ० बी०बी० त्रिपाठी 81

15. गायत्री तत्त्व
डॉ० (श्रीमती) कमला चौहान 86

16. वैदिक वाङ्मय में गायत्री महामन्त्र
डॉ० प्रियंका अग्रवाल, डॉ० ऋचा जैन 92

17. गायत्री माहात्म्य
डॉ० रामबदन 96

18. धरती पर कल्पवृक्ष है गायत्री-मन्त्र
डॉ० मिनति रथ 100

19. वेदमाता गायत्री महामन्त्र में विद्यमान चौबीस शक्तियाँ
डॉ० कंचन लता सिन्हा 105

20. गायत्री : औषधीय महत्त्व
डॉ० (श्रीमती) शालिनी शुक्ला 114

21. भारतीय संस्कृति का प्रतीक गायत्रीमन्त्र
श्रीमती रीना मिश्रा 121

Scanned with CamScanner

# 15
# गायत्री तत्त्व

*डॉ० (श्रीमती) कमला चौहान*

वेद हमारी हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृत के प्रकाश स्तम्भ हैं। ऋषियों-मनीषियों ने अपनी प्रज्ञा शक्ति से जिस परम सत्य का दर्शन किया, वही चारों वेदों के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं। इन चारों वेदों में प्रथम वेद के रूप में ऋग्वेद को स्वीकार किया जाता है। ऋग्वैदिक सूक्तों में तैंतीस देवताओं की उपासना की गई है। यास्क ने इन देवताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया है- पृथ्वी स्थानीय देवता, द्यु स्थानीय देवता एवं अन्तरिक्ष स्थानीय देवता। विभिन्न विद्वान प्राकृतिक शक्तियों को भी देवता तत्त्व मानते हैं। कुछ की दृष्टि में वह परमात्मा का बोध कराने वाला शब्द है। ऋग्वेद में इन्द्रादि देवताओं के सांथ ही सविता देवता का वर्णन भी मिलता है। सविता का सूर्य से साम्य मानकर कभी-कभी इन दोनों को एक ही मान लिया जाता है, किन्तु ऋग्वेद में यह वर्णन पृथक् रूप में किया गया है। सविता की एक प्राणदायिनी प्रेरक शक्ति के रूप में उपासना की गयी है। सूर्य मण्डल से निर्गत उष्णता से आरब्ध स्थूल क्रियाओं का द्योतक सूर्य है और सविता सम्पूर्ण संसार की गुप्त उत्पादक शक्ति का प्रकाशक है- ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में सविता का वर्णन इस प्रकार हुआ है-

**अभूददेवः सविता वन्द्यो नु न**
**इदानीमहनंउपवाच्यो नृभिः**
**वियो रत्ना भजति मानवेभ्यः**
**श्रेष्ठ नो अत्र द्रविणं यथा दधत्।।**[1]

---

1. ऋ० वे० 4/54/1

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
पंचम पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में प्रकृति संरक्षण

डॉ० शिवशंकर मिश्रः

Scanned with CamScanner

23. भारतीय संस्कृति में प्रकृति की महत्ता
*डॉ. संगीता मिश्रा* 136

24. संस्कृत साहित्य में प्रकृति संरक्षण की अवधारणा
*डॉ. (श्रीमती) कमला चौहान* 142

25. प्रकृति संरक्षण
*दिनेश चन्द्र पाण्डेय* 148

26. पर्यावरण संरक्षण एवं मानव जीवन
*डॉ. अर्चना वालिया* 153

27. पर्यावरण चेतना
*डॉ. सुषमा चमोली* 157

28. अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्
*डॉ. लवलेश कुमार मिश्र* 161

29. पर्यावरण संरक्षण का महत्व
*डॉ. नीतू गोयल* 164

30. जल प्रबन्धन-अतीत और वर्तमान
*डॉ. किशनाराम बिश्नोई* 168

31. प्रकृति पूजा की वैदिक संस्कृति
*श्रीमति रीमा सिन्हा* 174

32. उत्तराखण्ड में जल संरक्षण
*डॉ. डी०एस० नेगी, डॉ. अनुराधा नेगी, डॉ. भरतपाल सिंह* 178

33. वृक्षारोपण एवं दोहन
(वाल्मीकि रामायण और महाभारत के परिप्रेक्ष्य में)
*डॉ. सविता भट्ट* 187

34. प्रकृति के अभिन्न अंग है—शक्तिपीठों में सरोवर
*योगेश कुमार* 193

35. पुराण वाङ्मय में जल संरक्षणोपाय विमर्श
*डॉ. श्याम बापट* 199


Scanned with CamScanner

# 24

# संस्कृत साहित्य में प्रकृति संरक्षण की अवधारणा

डॉ. (श्रीमती) कमला चौहान

जीव तथा उनके वातावरण मिलकर एक तंत्र की संरचना करते हैं। जिसे पारिस्थितिकी या इकोसिस्टम कहते हैं पारिस्थितिकी के दो मुख्य भाग हैं। पादप पारिस्थितिकी एवं प्राणि पारिस्थतिकी। मनुष्य अपने वातावरण द्वारा निरन्तर प्रभावित होता रहा और इसे अपने अनुकूल बनाने के लिए प्रयास करता रहा। संस्कृत साहित्य वनस्पति तथा जीवन संरक्षण की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। वनस्पति एवं जीव संरक्षण में पर्यावरण अर्थात् उसके चारों तरफ के वातावरण का विशेष महत्त्व है। इन पर्यावरणीय तत्त्वों के रूप में पृथ्वी, जल, वायु औषधी (वनस्पति) इत्यादि का उल्लेख वेदों में सर्वप्रथम मिलता है। अथर्ववेद में अथर्वण ऋषि ने मातृभूमि को सभी पदार्थों (जल, अन्न, फल, शाक) की जननी कहा है। तथा पृथ्वी ही सभी सजीव प्राणियों को भोग्य पदार्थ एवं ऐश्वर्य को देने वाली है। ऋषि वीरों द्वारा संरक्षित इस पृथ्वी से मानव कल्याण (संरक्षण) की कामना करता है-

**यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।**
**पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि।।**[1]

पृथ्वी सूक्त में ही ऋषि सब प्रकार से अपनी, वनस्पति तथा जीवजगत् की समृद्धि के लिए पृथ्वी से याचना करते हुये सभी के संरक्षण की कामना करता है। क्योंकि सृष्टि के विकास हेतु सभी तत्त्वों का सन्तुलन आवश्यक है-

1. अथर्व वेद/12.1.1.27

Scanned with CamScanner

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
एकादश पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में मोक्ष

डॉ० शिवशंकर मिश्रः

Scanned with CamScanner

10. हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्
डॉ० कमलेश कुमार मिश्र 50

11. वाल्मीकि रामायण में मोक्षचिन्तन
डॉ० सविता भट्ट 54

12. मोक्ष प्राप्तव्य की प्राप्ति
डॉ० सुनीता कुमारी 61

13. सांख्यशास्त्र में प्रतिपादित बन्धन और मोक्ष
डॉ० शशिकान्त द्विवेदी 67

14. अचिन्त्यभेदाभेदवादी की दृष्टि में मुक्ति का स्वरूप
डॉ० अनिलानन्द 79

15. योगवासिष्ठ में मोक्ष का स्वरूप
प्रो० भिनति रथ 86

16. श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष चिन्तन
डॉ० ब्रह्मानन्द पाठक 91

17. उपनिषदों में वर्णित मोक्षमार्ग
डॉ० कमला चौहान 106

18. दुर्लभं त्रयमेवैतत्, देवानुग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः।।
डॉ० शालिनी त्रिपाठी 111

19. काश्मीर शैवदर्शन के मोक्ष की समीक्षा
प्रो. हरेराम त्रिपाठी 116

20. मोक्ष-मुक्ति-शाश्वतशान्ति अथवा परमानन्दानुभूति
आचार्य पद्मराज जोशी 'पथिक' 123

21. उपनिषद्–मोक्षसन्दर्भ
डॉ० शिवशंकर मिश्र 130

Scanned with CamScanner

# 17
# उपनिषदों में वर्णित मोक्षमार्ग

डॉ० कमला चौहान

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्टय का विशेष महत्त्व है। पुरुष शब्द की व्युत्पत्ति पुरि शेते अर्थात् जो शरीर में शयन करता है से हुयी है, जो शरीर में स्थिर हो, उस चैतन्यांश जीव को पुरुष कहते हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार पुरुष ब्रह्म है, परन्तु समाज में हम पुरुष शब्द का अर्थ मनुष्य करते है। '*पुरुषैः अर्थ्यते इति पुरुषार्थः*' इस व्युत्पत्ति के अनुसार मनुष्य जब फल की इच्छा से कोई कर्म करता है, तो उसे पुरुषार्थ कहा जाता है। ये अभिलषित फल चार हैं- धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। इन चारों पुरुषार्थों में अर्थ, काम व मोक्ष का मूल धर्म है। विश्व के सभी धर्म व दर्शनों में जीवन का अन्तिम उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति माना गया है। इसी कारण मोक्ष को परम पुरुषार्थ भी कहा गया है। भारतीय समाज में मानव जीवन के कल्याणार्थ पुरुषार्थ चतुष्टय की व्यवस्था की गयी है, इस दृष्टि से पुरुषार्थ शब्द में पुरुष से तात्पर्य जीवात्मा से है। इस प्रकार पुरुष के लिए किया गया कर्म पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ का मुख्य लक्ष्य जीव का पारलौकिक कल्याण करना है।

मोक्ष शब्द मुक्ति का पर्याय है। मुक्ति शब्द की निष्पत्ति मोचन अर्थवाली मुच्-धातु से क्तिन् प्रत्यय लगने से होती है। इसका अर्थ है- छुटकारा पाना। सांसारिक जन्म मरण के बन्धनों से छुटकारा पाने की अवस्था मुक्ति कहलाती है। वासना, तृष्णा, लोभ, मोह, अहंकार आदि बन्धनों से छुटकारा पाने की अवस्था मुक्ति है। उपनिषद् तत्त्व ज्ञान का स्रोत हैं। प्रायः सभी उपनिषदों का उद्देश्य एक ही निराकर व निर्गुण ब्रह्म का विवेचन करना है। उपनिषदों में यह विवेचन इस प्रकार हुआ है, कि उस ज्ञान मार्ग से चलकर व्यक्ति अन्त में ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। वह अपने परम लक्ष्य परमात्मा का साक्षात्कार

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
अष्टम पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में यज्ञ

डॉ० शिवशंकर मिश्रः

श्रीजयराम आश्रम ग्रन्थमाला
अष्टम पुष्प

# भारतीय चिन्तन परम्परा में यज्ञ

संरक्षक
**ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी**
परमाध्यक्ष, जयराम संस्थाएँ

सम्पादक
**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**
एम०ए०, पी-एच०डी०
नव्यन्यायाचार्य, तु०दर्शनाचार्य
(लब्धपञ्चस्वर्णपदक)

ईस्टर्न बुक लिंकर्स
दिल्ली : : (भारत)

10. पञ्च महायज्ञ एवं उनकी प्रासंगिकता का निर्धारण
*डॉ. रामबहादुर शुक्ल* 65

11. वेदास्तु यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः
*डॉ. शिवशंकर मिश्र* 79

12. यज्ञ परम्परा एवं उसका महत्त्व
*डॉ. श्रीमती कमला चौहान* 86

13. श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञस्वरूप
*डॉ. आशुतोष गुप्त* 92

14. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः
*डॉ. राधेश्याम गंगवार* 99

15. याज्ञिकी पर्यावरणीय अवधारणा
*डॉ. मुकेश कुमार* 105

16. वैदिक यज्ञ-सर्वाङ्गीण समृद्धि का साधन
*डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी* 116

17. यज्ञ से ही विज्ञान का उद्भव
*विष्णु प्रसाद सेमवाल* 123

18. यज्ञ और वृक्ष
*डॉ. सविता भट्ट* 130

19. यज्ञ स्वर्ग्य नौका
*डॉ. शालिनी त्रिपाठी* 137

20. यज्ञ के प्रकार और उसकी विशेषताएँ
*डॉ. रामकिशोर मिश्र* 146

21. नाट्यशास्त्रः एक महायज्ञ
*डॉ. अजीत पंवार* 148

22. पंचमहायज्ञों की विवेचना व शिवपुराण
*महेश दुर्गापाल* 155

23. यज्ञ में पितृ यज्ञ की उपादेयता
*द्वारिका प्रसाद नौटियाल* 161

# 12

# यज्ञ परम्परा एवं उसका महत्त्व

*डॉ. श्रीमती कमला चौहान*

ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे प्राचीन वेद है। भारतीय परम्परा वेदों को अनादि एवं अपौरुषेय मानती है। यज्ञ का सबसे पहले वर्णन हमें ऋग्वेद में प्राप्त होता है, अतः हमारी संस्कृति में यज्ञ परम्परा उतनी प्राचीन है जितना कि ऋग्वेद। वैदिक धर्म को विद्वानों द्वारा यज्ञों का धर्म कहा जाता है, इन विद्वानों ने यह स्वीकार किया कि वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यज्ञ है। इसीलिए पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायणाचार्य को याज्ञिक भाष्यकार की उपाधि प्रदान की।यज्ञ पद देवपूजा संगतिकरण एवं दान अर्थ वाली यज् धातु में नङ् प्रत्यय करने से बनता है- यजदेव-पूजासङ्गतिकरणदानेषु[1] जिस कार्य में देवपूजन, दान एवं यजमान को देवताओं का सामीप्य प्राप्त हो, वह यज्ञ है। यहाँ दान से तात्पर्य देवताओं को हवि देने से है। यज्ञ को अन्य अनेक अध्वर, मख आदि नामों से भी कहा गया है। आचार्य यास्क निरुक्त में अध्वर पद का निर्वचन इस प्रकार करते हैं- अध्वर इति यज्ञनाम, ध्वरतिर् हिंसा कर्मा, तत्प्रतिषेधः।[2] अर्थात् ध्व धातु हिंसा अर्थ वाली है और जिसमें हिंसा का निषेध हो वह अध्वर है। मख पद गत्यर्थक मख् धातु से घञ् प्रत्यय करने से बनता है, जिस कर्म के अनुष्ठान में देवता उपस्थित होते हैं उसे मख कहा गया है।

मख इत्येतद् यज्ञनामधेयम्।
छिद्र प्रतिषेध सामर्थ्यात् छिद्रंखमित्युक्तम्।[3]

---

1. सिद्धान्त कौमुदी- 3211
2. निरुक्त- 1/2 पृ०73
3. गो०ब्रा०- 2/2/5

सामान्यतया अग्नि प्रज्वलित कर उसमें आहुति (तिल जौ घी आदि) दिये जाने को यज्ञ कहा जाता है। परन्तु यज्ञ के अन्य भी तात्पर्य हैं वैदिक ऋषियों ने गृहस्थ जीवन के पाँच आवश्यक कर्त्तव्यों को भी यज्ञ की संज्ञा प्रदान की। इन्हें पञ्च महायज्ञ कहा गया, ये पञ्च महायज्ञ- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ व मनुष्ययज्ञ के नाम से जाने जाते हैं। वेदाध्ययन ब्रह्मयज्ञ है, स्वाहा शब्द के साथ अग्नि में समिधा डालना ही देवयज्ञ है, पितरों को तर्पण देना पितृयज्ञ है, मनुष्य, गाय बैल, कुत्ता, कौओं, कीडों आदि प्राणियों को अन्न, जल, घास आदि द्वारा तृप्त करना भूतयज्ञ है, इसमें देवताओं, वृक्ष वनस्पतियों को लक्ष्य करके भी बलि दी जाती है, तथा अतिथि सत्कार करना नृयज्ञ या मनुष्ययज्ञ है।

वैदिक ऋषियों ने सामाजिक व्यवस्था एवं पर्यावरण के सन्तुलन के निमित्त इस प्रकार की व्यवस्था की थी। इस प्रकार वेदों में यज्ञ का अर्थ केवल अग्नि में हवि देना न होकर उसके व्यापकतम अर्थ को बतलाता है। जिसमें ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, द्रव्ययज्ञ, दानयज्ञ, ज्ञानयज्ञ, योगयज्ञ एवं तपोयज्ञ सारे यज्ञ सम्मिलित हो जाते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के अनेक सूक्तों में हमें यज्ञ के विविध स्वरूपों का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ ही यज्ञ से होता है, यह यज्ञ विराट पुरुष का एक मानसिक संकल्प है, जिससे सृष्टि के समस्त जड़-चेतन पदार्थों की उत्पत्ति होती है। देवताओं ने सृष्टि उत्पत्ति के लिए उस यज्ञरूप प्रजापति का पूजन किया - **यज्ञेन यज्ञम् अयजयन्त देवाः**[1], और उस सृष्टि उत्पत्ति रूपी यज्ञ से अनेक पदार्थों की उत्पत्ति हुई-

**तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्**
**पशून्तांश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये।।**[2]

यज्ञ को नित्य जीवन का अंग बनाकर वैदिक ऋषियों ने वेद मन्त्रों द्वारा यज्ञ की महत्ता का प्रतिपादन किया। सृष्टि उत्पत्ति विषयक सभी सूक्तों में यज्ञ के द्वारा सृष्टि कर्त्ता प्रजापति को प्रसन्न करने के लिए देवों तथा सिद्ध ऋषियों ने पूजन किया। तब इस यज्ञ से सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, दिशायें, पर्वत,

1. ऋ०वे०/पु० सू०- 10/90/16
2. ऋ०वे०/पु० सू०- 10/90/8

पशु-पक्षी उत्पन्न हुये। हिरण्यगर्भ सूक्त के प्रत्येक मन्त्र का अन्तिम चरण भी यज्ञ के व्यापक अर्थ का समर्थन करता है - **कस्मैदेवाय हविषा विधेम।**[1] भौतिक यज्ञ की दृष्टि से अग्नि का विशेष महत्त्व है, ऋग्वेद में दो सौ सूक्त अग्नि की स्तुति में हैं। अग्नि की तीन विशेषतायें कही गयी हैं- पहला नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न होना, दूसरा यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करना तथा तीसरा तेज तथा प्रकाश स्वरूप होना। अग्नि यज्ञ के माध्यम से यजमान की कामनाओं को पूर्ण करने वाला है अग्नि को यज्ञ का पुरोहित, देवताओं का ऋत्विक् कहा गया है - **अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।**[2] यज्ञीय अग्नियाँ वायु को शुद्ध कर शरीर को स्वस्थ रखती हैं - **वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्यनिक्त्वासन्**[3] अर्थात् अग्निहोत्र तथा अन्य यज्ञों की अग्नि मुझे तेज द्वारा सम्यक् रूप से लीप दें। स्वाध्याय यज्ञ मेरे मुख में मेधाजनक वेदवाणी को नितरां अभिव्यक्त करें। यहाँ विष्णु पद यज्ञ अर्थ में प्रयुक्त है। यज्ञ देवताओं की तृप्ति के लिए होता है। इस तृप्ति से देवगण मनुष्यों को सुख सम्पत्ति देते हैं। अग्नि यज्ञ के माध्यम से हवि को देवताओं तक पहुंचाने वाला है। इसे गमनशील देव कहा गया है-

**अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स देवेषु गच्छति।**[4]

ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में यज्ञ के महत्त्व का प्रतिपादन हुआ है। मित्रावरुण सूक्त में कहा गया है- यज्ञ न करने वाले पुरूषों के महीने या समय पुत्रों के बिना ही व्यतीत हो जायें और यज्ञ बुद्धि वाला पुरुष बल की वृद्धि करे - **अयन्मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते।**[5]

यज्ञ में स्तोत्र का विशेष महत्त्व है, यज्ञ के बाधा रहित होने के लिए हवि युक्त नमस्कारों से मित्र और वरुण देवता का आह्वान किया जाता है - **समु वां यज्ञं मध्यं नमोभिर् हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः।**[6] सोम रस का सम्बन्ध भी यज्ञ से है, यह इन्द्रादि देवताओं का अत्यन्त प्रिय है। सोम रस

---

1. ऋ॰वे॰/हि॰सू॰- 10/121
2. ऋ॰वे॰/अग्नि॰सू॰- 1/1/1
3. अथर्व॰वे॰/का॰18/सू॰- 3/11
4. ऋ॰वे॰ /अग्नि॰सू॰ - 1/1/4
5. ऋ॰वे॰/मित्राव॰सू॰ - 7/61/4
6. ऋ॰वे॰/मित्राव॰सू॰- 7/61/6

की हवि यज्ञ में देवताओं को प्रसन्नता देती है, **वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।**[1]

इन्द्र ने बैल के समान बल युक्त होते हुये ज्योति, गौ और आयुनाम वाले तीन यज्ञों में अभिषव किये गये सोम रस का पान किया।

दशम मण्डल के यम सूक्त में कहा गया है कि- इन्द्रादि देवता स्वाहा के द्वारा अर्थात स्वाहा की ध्वनि के साथ अर्पित की गयी हवि द्वारा तथा पितर स्वधा अर्थात् श्राद्ध में दिये गये पिण्ड दान द्वारा प्रसन्न होते हैं-

**यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्स्वाहान्ये स्वधयान्येमदन्ति।**[2]

यज्ञ के अवसर पर देव एवं पितरों का आगमन यजमानों को प्रसन्नता को देने वाला है-

**अङ्गिरोभिरागहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व।**[3]

वेद जिस प्रकार यज्ञ की अनेक अर्थो (ज्ञानयज्ञ एवं भौतिक यज्ञादि) में व्याख्या करते हैं, उसी प्रकार गीता का ज्ञान भी यही सिद्ध करता है कि चाहे यज्ञ किसी प्रकार का हो, इन सबका उद्देश्य जीवन के प्राप्त अनुभव एवं ज्ञान द्वारा अन्त में भगवान की प्राप्ति ही है- **द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः।।**[4] कुछ लोग दान-पुण्य कर्मो द्वारा अपनी सम्पत्ति से यजन करते हैं, यह द्रव्ययज्ञ है, कुछ जीवन के सुखों के त्याग द्वारा अर्थात् व्रतादि द्वारा यजन करते हैं, यह तपोयज्ञ है, कुछ अष्टांग योग अर्थात् योग पद्धतियों द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करना चाहते हैं, यह योगयज्ञ है, कुछ विद्वान स्वाध्याय अर्थात् वेदाध्ययन द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करना चाहते हैं, यह स्वाध्याय यज्ञ है, इन सबसे मिलने वाले फल के विषय में गीता एकमत है-

**सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः।**
**यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।।**[5]

1. ऋ०वे० /इन्द्र०सू० - 1/32/3
2. ऋ०वे० /यम०सू० - 10/14/3
3. ऋ०वे० /10/14/5
4. श्रीमद्भ०गी०/4/28
5. श्रीमद्भ०गी०/4/30

इस प्रकार उक्त सभी प्रकार के यज्ञ करने वाले पुरुष यज्ञ का अर्थ जानने से पाप कर्मो से विरत या मुक्त हो जाते हैं और सभी प्रकार के यज्ञों के अन्तिम फल परमात्मतत्त्व को प्राप्त कर लेते हैं। यज्ञ न करने वाला तो इस लोक में ही सुख पूर्वक नहीं रह सकता, फिर जन्मान्तर में कैसे सुख प्राप्त कर सकता है-

**नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।**[1]

यद्यपि वेदों में भी कर्त्ता की भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न यज्ञों का विधान है, क्योंकि सांसारिक लोग भौतिकता में लीन होते हैं। अतः इन यज्ञों की व्यवस्था मानव के लिए इस प्रकार की गयी कि वह अपनी देह, बुद्धि व मन की सामर्थ्य के अनुसार इनका सम्पादन कर सके। यज्ञ इनमें से किसी भी भावना से किया जाय, मानव एवं इस सम्पूर्ण लोक के लिए कल्याणकारी है, अतः गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं -

**श्रेयान्द्रव्यमयाद् यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तपः।**
**सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।**[2]

अर्थात् हे परंतप! द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है। हे अर्जुन! अन्ततोगत्वा सारे कर्मयज्ञों का अवसान दिव्यज्ञान से ही होता है। क्योंकि इस ज्ञान से रहित यज्ञ केवल भौतिक कर्म मात्र है, इसका कोई आध्यात्मिक फल प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि दिव्यज्ञान की प्राप्ति से ही मानव शीघ्रता से परम शान्ति को प्राप्त कर लेता है।

**उत्सवेषु च सर्वेषु गीत-नृत्तविनोदने।**
**दानकर्मणि यज्ञे च तथा युद्धे ऋतूत्सवे।।**
**जनैर्नवाम्बरं धार्यं न दुष्यति कदाचन।**

समस्त प्रकार के उत्सवों में, माङ्गलिक गायन में, नर्तन में (नाच में), खेल-कूद में, दान कर्म में, यज्ञ में, युद्ध में और वसन्त आदि उत्सवों में मनुष्यों को नवीन वस्त्र (कोरा वस्त्र) धारण करना चाहिये, ऐसे अवसरों पर नवीन वस्त्र धारण करना दूषित नहीं समझा जाता है।

---

1. श्रीमद्भ०गी०/4/31
2. श्रीमद्भ०गी० /4/33

एतेषामप्यलाभे तु सर्वेषामेव यज्ञियाः। (यमः, शौनकश्च)
यज्ञ के योग्य शास्त्रविहित लकड़ी प्राप्त न हों, तो जो लकड़ी मिले वही यज्ञ के योग्य कही गई है।

निवासा ये च कीटानां लताभिर्वेष्टिताश्च ये।
अयज्ञिया गर्हिताश्च बल्मीकैश्च समावृताः।।
शकुनीनां निवासाश्च वर्जयेत्तान् महीरुहान्।
अन्यांश्चैवंविधान् सर्वान् यज्ञियांश्च विवर्जयेत्।।

-वायु पुराण

जिन वृक्षों में कीड़े-मकोड़े रहते हों, जो लताओं से परिवेष्टित हों, वे यज्ञार्ह नहीं हैं। इमली, कटहर आदि जो यज्ञादि में निन्दित हैं, बबूल आदि काँटेदार वृक्ष, जिनमें दीमकों ने बांबी बना रखी हों और जिनमें विशेष पक्षी रहते हों ऐसे और इस प्रकार के अन्यान्य सब वृक्षों को, वे यज्ञार्ह ही क्यों न हों, यज्ञ के काम में नहीं लेना चाहिये।

स्नातश्च वरुस्तेजो जुह्वतोऽग्निः श्रियं हरेत्।
भुञ्जानस्य यमस्त्वायुस्तस्मान्न व्याहरेत् त्रिषु।।

-वृद्धमनुः

स्नान करते समय बोलने वाले के तेज को वरुण हरण कर लेते हैं, हवन करते समय बोलने वाले की श्री को अग्निदेव हरण कर लेते हैं तथा भोजन करते समय बोलने वाले की आयु को यमदेव हरण कर लेते हैं। अतः उक्त तीनों कर्मों में मनुष्य को बोलना नहीं चाहिये।

स्वाहा कुर्यान्न मन्त्रान्ते न चैव जुहुयाद्धविः।
स्वाहाकारेण हुत्वाऽग्नौ पश्चान्मत्रं समापयेत्।।

-कात्यायनस्मृति 17/14

मन्त्र के अन्त में स्वाहा न करें और न हविष् का हवन करे। स्वाहाकार से अग्नि में हवन करके बाद में मन्त्र को समाप्त करे।

अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने।
यजमानो, भवेदन्धः सोऽपुत्र इति न श्रुतम्।।

-वायुपुराण 75/62

जो यजमान अग्नि के ठीक-ठीक न जलने पर और धूम के रहते हुए अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है, ऐसा हमने सुना है।

प्रकाशक :

**ईस्टर्न बुक लिंकर्स**

हेड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
ebl@vsnl.net
Website : www.eblindology.com

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 550

ISBN : 978-81-7854-358-1

---

**भारतीय चिन्तन परम्परा में गायत्री**

**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**

---

टाईप सैटिंग : **क्रियेटिव ग्राफिक्स**, दिल्ली
मुद्रक : **आर. के. प्रिंट सर्विस**, दिल्ली

प्रकाशक :
**ईस्टर्न बुक लिंकर्स**
हेड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
ebl@vsnl.net
Website : www.eblindology.com

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 950

ISBN : 978-81-7854-361-1

**भारतीय चिन्तन परम्परा में मोक्ष**

**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**

टाईप सैटिंग : **क्रियेटिव ग्राफिक्स**, दिल्ली
मुद्रक : **आर. के. प्रिंट सर्विस**, दिल्ली

प्रकाशक :
**ईस्टर्न बुक लिंकर्स**
हेड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
ebl@vsnl.net
Website : www.eblindology.com

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 750

ISBN : 978-81-7854-362-8

**भारतीय चिन्तन परम्परा में प्रकृति**

**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**

टाइप सैटिंग : **क्रियेटिव ग्राफिक्स**, दिल्ली
मुद्रक : **आर. के. प्रिंट सर्विस**, दिल्ली

This volume is the outcome of a National Conference organized by the Department of History, Indian History, Culture & Archaeology, HNB Garhwal Central University, Srinagar, Garhwal in Collaboration of Maharashi Sandipani Ved Vidya Pratishthan, Ujjain from 4-6th March, 2017. The editor would like to thank HNB Garhwal University, Maharashi Sandipani Ved Vidya Pratishthan, Ujjain and UCOST, Dehradun for funding the Conference and all the contributors who contributed their articles being published in the volume. The contributors are responsible for the contents published in the volume.

© Dinesh Prasad Saklani
HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal 2021
(Editor)

**Book Name :** Relevance of Vedic Environmental Ethics in the Contemporary World

**Editor :** Dinesh Prasad Saklani

**Edition :** 2021

**ISBN :** 978-81-948189-0-8

**Published by:** Shree Publishers & Distributors
22/4735, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110 002

**Printed by :** In-house (Self)
New Delhi-110 002

प्रकाशक :
**ईस्टर्न बुक लिंकर्स**
हेड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
ebl@vsnl.net
Website : www.eblindology.com

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 750

ISBN : 978-81-7854-364-2

---

**भारतीय चिन्तन परम्परा में यज्ञ**

**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**

---

टाईप सैटिंग : **क्रियेटिव ग्राफिक्स**, दिल्ली
मुद्रक : **आर. के. प्रिंट सर्विस**, दिल्ली

प्रकाशक :
**ईस्टर्न बुक लिंकर्स**
हेड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
ebl@vsnl.net
Website : www.eblindology.com

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 750

ISBN : 978-81-7854-364-2

---

**भारतीय चिन्तन परम्परा में यज्ञ**

**डॉ० शिवशङ्कर मिश्र**

---

टाईप सैटिंग : **क्रियेटिव ग्राफिक्स**, दिल्ली
मुद्रक : आर. **के. प्रिंट सर्विस**, दिल्ली

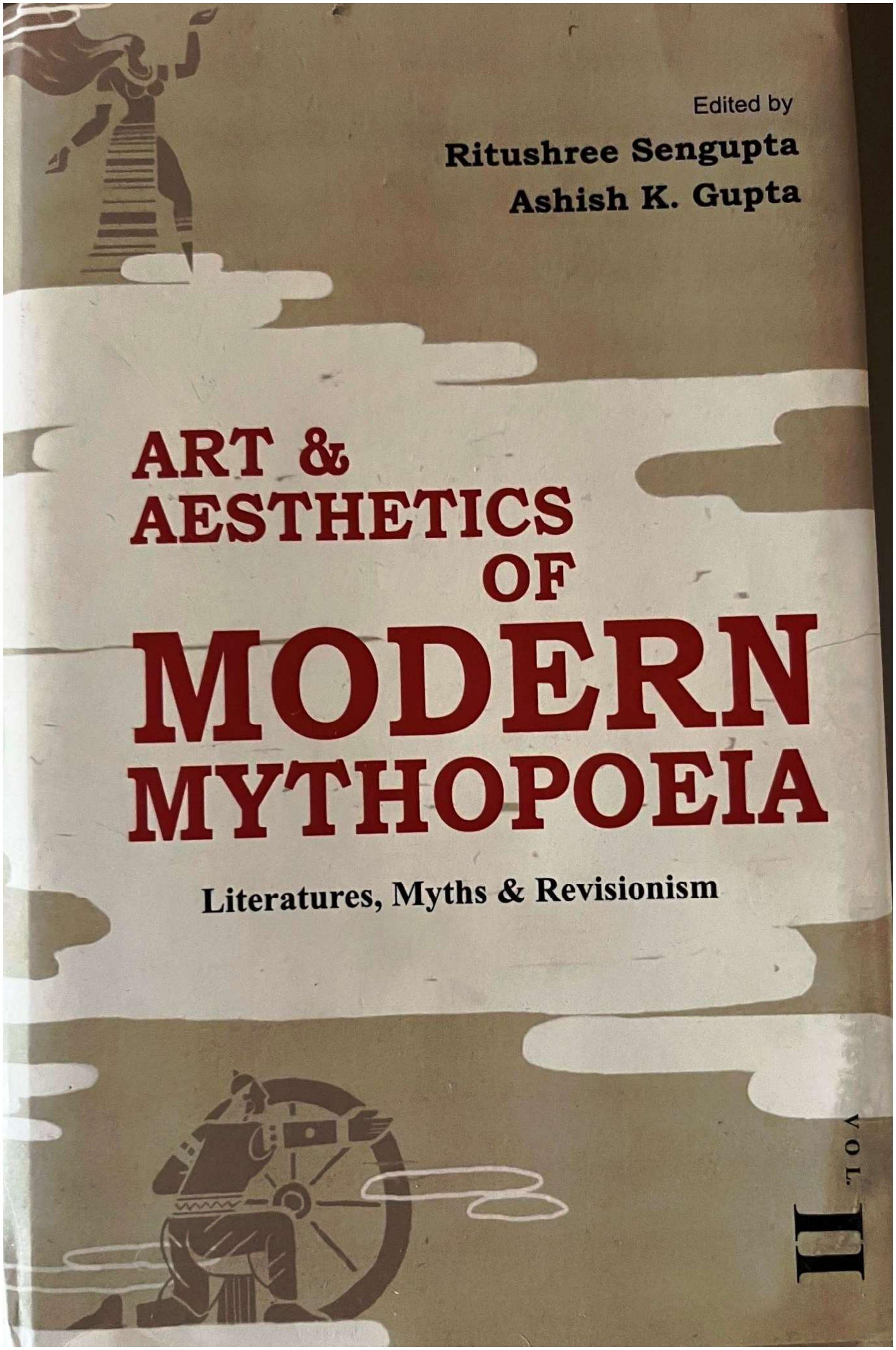
Edited by
Ritushree Sengupta
Ashish K. Gupta
ART &
AESTHETICS
OF
MODERN
MYTHOPOEIA
Literatures, Myths & Revisionism
VOL. II

# Contents

*Foreword* vii

*Preface* ix

*Notes on Contributors* xvii

1. 'Ecology was my home now': Nandini Sahu's Ecofeminist Reading of the Myth of Sita 1
**Abhishek Chowdhury**

2. Is Greatness Dependent on Birth or Caste?: Reshaping the Mythical Realism depicted in Ranjit Desai's *Karna: The Great Warrior* 17
**Arundhati Patra**

3. Demythologizing the Hegemonic Myth: Jotirao Phule's *Slavery* 25
**Anandkumar Ubale**

4. Myth Representation and Human Culture in Contemporary Society 40
**Brajesh Kumar Gupta "Mewadev"**

5. Eco-criticism in Mythology: Representation of Nature in the *Ramayana* of Bhanubhakta 53
**Dechen Dolkar Bhutia**

6. Apsaras: The Lost Myth 62
**Guni Vats**

7. The Myth of Good Women: A Revisionist Reading of *The Penelopiad* and *Yagnaseni* 75
**Muskaan Kapoor**

8. Re-visioning the Myths of Ambaa and Shoorpanakha in Feminist Theatrical Narratives: Is it their Protest or Resistance? 91
**Praggnaparamita Biswas**

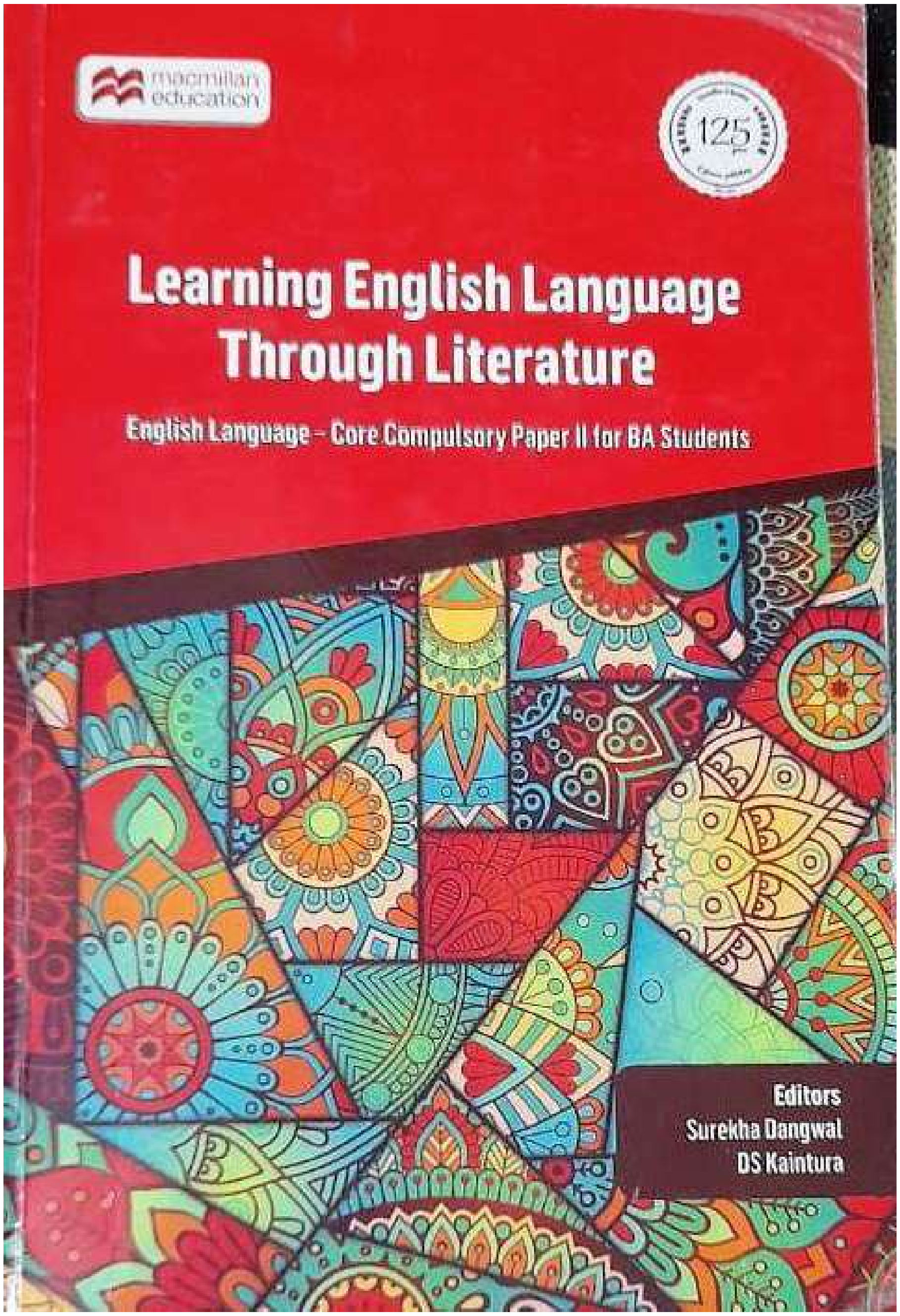
macmillan education
125
Learning English Language Through Literature
English Language – Core Compulsory Paper II for BA Students
Editors
Surekha Dangwal
DS Kaintura

# Learning English Language Through Literature

English Language - Core Compulsory
Paper II for BA Students

126608

**Editors**

Surekha Dangwal
*Professor, Department of English,*
*Modern European and Other Foreign Languages*
*Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University,*
*Srinagar (Garhwal), Uttarakhand*

DS Kaintura
*Professor, Department of English,*
*Modern European and Other Foreign Languages*
*Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University,*
*Srinagar (Garhwal), Uttarakhand*

macmillan education

12660

MACMILLAN

© *Macmillan Publishers India Private Ltd, 2017*

All rights reserved under the copyright act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer language, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

*First published 2017*

**MACMILLAN PUBLISHERS INDIA PRIVATE LTD**
Delhi Bengaluru Chennai Kolkata Mumbai
Ahmedabad Bhopal Chandigarh Coimbatore
Cuttack Guwahati Hyderabad Jaipur Lucknow Madurai
Nagpur Patna Pune Thiruvananthapuram Visakhapatnam

ISBN: 978-9386-85384-4

Published by Macmillan Publishers India Private Ltd,
21, Patullos Road, Chennai 600002, India

Printed at : Tara Art Printers Pvt. Ltd., Noida

The publishers have applied for copyright permission for those pieces that need copyright clearance and due acknowledgement will be made at the first opportunity.

"This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action."

12 6608

MACMILLAN

© *Macmillan Publishers India Private Ltd, 2017*

All rights reserved under the copyright act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer language, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

*First published 2017*

**MACMILLAN PUBLISHERS INDIA PRIVATE LTD**
Delhi Bengaluru Chennai Kolkata Mumbai
Ahmedabad Bhopal Chandigarh Coimbatore
Cuttack Guwahati Hyderabad Jaipur Lucknow Madurai
Nagpur Patna Pune Thiruvananthapuram Visakhapatnam

ISBN: 978-9386-85384-4

Published by Macmillan Publishers India Private Ltd,
21, Patullos Road, Chennai 600002, India

Printed at : Tara Art Printers Pvt. Ltd., Noida

The publishers have applied for copyright permission for those pieces that need copyright clearance and due acknowledgement will be made at the first opportunity.

"This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action."

ISSN-0970-843X

# JODHPUR STUDIES IN ENGLISH

Vol. XIX, 2021

**Board of Editors:** KALPANA PUROHIT
SATISH KUMAR HARIT

**Guest Editor:** SHARAD K. RAJIMWALE

**Department of English**
**Jai Narain Vyas University, Jodhpur**
**Rajasthan (India)**

## CONTENTS


1. Damn Pigeons 01
*-Meher Pestonji*

2. Literary Representation of Disease: A Study of Selected Works 05
*- Loveleen*

3. Art and Human Existence 14
*- Vivek Sachdeva*

4. Writing of Love in the Letters of Separation in Love in the Time of Cholera (1985[1988]) by Gabriel Garcia Marquez 27
*-Anil Kumar Prasad*

5. Social and cultural constructs in Indian diaspora literature 36
*-Kalpana Purohit*

6. The Third Gender: Challenging Stereotypes 49
*-Madhuri Chawla*

7. Doris lessing 's the golden notebook: transcending across 'golden 'genders 57
*- Anita Sharma*

8. Indian Perspective on Orality and Translation 68
*-Divya Joshi*

9. Modern relevance of communisttotalitarian theme in nineteen eighty four and animal farm 76
*-D S Kaintura*
*Pradeep Singh Kandari*